ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष-18 अंक-14 अक्टूबर-II-2018 (पाक्षिक) माउण्ट आबू Rs. 10.00

ब्रह्माकुमारी संस्थान ने भारत की प्रतिष्ठा को दुनिया भर में पुनः प्रतिस्थापित करने का काम किया है : माननीय प्रधानमंत्री

शांतिवन। स्वच्छ भारत अभियान के दूसरे चरण का शुभारंभ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने किया। इसमें देशभर के अलग-अलग राज्यों में उन्होंने वीडियो कॉन्फ्रेन्सिंग के ज़रिए बात की। आरंभ में प्रधानमंत्री ने स्वच्छ भारत मिशन की ब्रांड एम्बेसडर राजयोगिनी दादी जानकी को प्रणाम करते हुए उनके अच्छे स्वास्थ्य की कामना की।

शांतिवन के कॉन्फ्रेन्स हॉल में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से 'स्वच्छता ही सेवा अभियान' को सम्बोधित करते हुए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी। मंच पर राजयोगिनी दादी जानकी, दादी रतनमोहिनी तथा ब्र.कु. मृत्युंजय।

अपने सम्बोधन में उन्होंने कहा कि स्वच्छ भारत मिशन का यह सपना मेरे सभी देशवासियों और युवा साथियों के सहयोग से संभव हो पा रहा है। मैं ब्रह्माकुमारी संस्थान का स्वच्छता अभियान से जुड़ने के लिए आभार व्यक्त करता हूँ। संस्थान ने भारत की प्रतिष्ठा को दुनियाभर में पुनः प्रतिस्थापित करने का काम किया है। आज ये कार्य हर एक के पुरुषार्थ से संभव हो पा रहा है। आपने अगले पंद्रह दिन में पचास से अधिक स्थानों को स्वच्छ करने का जो लक्ष्य रखा है वह बहुत ही काबिले तारीफ है।

- **स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन, ये मार्ग कर रहा स्वच्छता के स्थायी संस्कार विकसित**
- **पीएम ने संस्थान के कार्यों की सराहना की, बोले : स्व परिवर्तन से ही होगा विश्व परिवर्तन**
- **स्वच्छ भारत अभियान का दूसरा चरण**
- **वीडियो कॉन्फ्रेन्सिंग से देशभर के पंद्रह स्थानों पर की बात**
- **ब्रह्माकुमारी संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी हैं ब्रांड एम्बेसडर**
- **दो अक्टूबर तक ब्रह्माकुमारीज़ ने चलाया विशेष स्वच्छता अभियान**
- **एक साथ तलहटी के चार स्थानों से आरंभ हुआ स्वच्छता अभियान का कार्यक्रम**

समाज से जुड़ी समस्याओं के समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा संस्थान : मोदी

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि आप हमेशा से समाज से जुड़ी समस्याओं के समाधान के लिए अपनी भूमिका निभाते रहे हैं। स्वच्छता के प्रति जन-जागरण में भी ब्रह्माकुमारी संस्थान हमेशा से आगे रहा है। संस्थान ही नहीं, आदरणीय दादी जानकी जी खुद भी ब्रांड एम्बेसडर के रूप में इस अभियान को गति देने में निरंतर अपनी भूमिका निभा रही हैं।

स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन का जो आपका मार्ग है, वह देश में स्वच्छता के स्थायी संस्कार विकसित करने में महत्वपूर्ण साबित हो रहा है। संस्थान के कार्यकारी सचिव ब्र.कु. मृत्युंजय ने प्रधानमंत्री मोदी को स्वच्छ भारत अभियान की बधाई देते हुए इसे एक ऐतिहासिक पहल बताया। साथ ही सभी ब्र.कु. भाई बहनों ने प्रधानमंत्री का अभिवादन किया।

एक साथ ली स्वच्छता की शपथ

प्रधानमंत्री के सम्बोधन के पश्चात् शांतिवन के कॉन्फ्रेन्स हॉल में एक साथ हज़ारों लोगों ने स्वच्छता की शपथ ली। इस दौरान वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. गीता ने सभी को शपथ दिलाई कि आज से स्वच्छता की शुरुआत अपने घर से करेंगे। घर के आसपास के क्षेत्र को स्वच्छ रखेंगे। सार्वजनिक स्थानों पर कभी भी खुले में कचरा नहीं डालेंगे। स्वच्छता ही सेवा है, इस लक्ष्य के साथ सभी कर्म करेंगे तथा दूसरों को भी गंदगी फैलाने से रोकेंगे।

दो अक्टूबर तक पचास स्थानों पर चलाया गया सफाई अभियान

पंद्रह सितम्बर से शुरु हुआ यह सफाई अभियान दो अक्टूबर तक रोज़ाना अलग-अलग क्षेत्रों में चलाया गया। इन पंद्रह दिनों में संस्थान ने पचास स्थानों को स्वच्छ करने का बीड़ा उठाया।

ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी ने कहा

नागपुर जामठा में ब्रह्माकुमारीज़ के 'विश्व शांति सरोवर' का उद्घाटन

ब्रह्मा समान सोचें, बोलें और व्यवहार करें

दादी के साथ आध्यात्मिक वार्तालाप करते हुए केन्द्रीय भूतल परिवहन मंत्री माननीय नितिन गडकरी, पूर्व सांसद विजय दर्डा, ब्र.कु. संतोष दीदी , ब्र.कु. रजनी दीदी तथा अन्य।

दादी जानकी के साथ दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए पालक व ऊर्जा मंत्री बावनकुले, ब्र.कु. संतोष, ब्र.कु. रजनी, सुशील अग्रवाल, ब्र.कु. कुलदीप,हैदराबाद, ब्र.कु. हंसा, ब्र.कु. प्रेम प्रकाश व अन्य।

नागपुर-जामठा(महाराष्ट्र)। ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी ने नागपुर शहर के समीप, वर्धा रोड, जामठा स्थित ब्रह्माकुमारीज़ के रिट्रीट एवं ट्रेनिंग सेंटर 'विश्व शांति सरोवर' का उद्घाटन किया। दादी जानकी ने साधारण भोजन की बजाय ब्रह्माभोजन करने और ब्रह्मा समान सोचने, बोलने और ब्रह्मा समान व्यवहार करने का सरल मंत्र उपस्थितों को दिया। उन्होंने सरल शब्दों में ओम शांति का अर्थ समझाते हुए कहा कि मैं कौन? मैं आत्मा हूँ। मेरा कौन है? मेरा परमात्मा है। मैं आत्मा कहने से आत्मा में लाइट, मेरा परमात्मा कहने से माइट और इससे एवरीथिंग ऑलराइट हो जाएगा।

'विश्व शांति सरोवर' के उद्घाटन समारोह में पालकमंत्री चंद्रशेखर बावनकुले, ब्रह्माकुमारीज़ की ज़ोन प्रमुख ब्र.कु. संतोष दीदी, वरीष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. उषा दीदी, शांति सरोवर हैदराबाद की निदेशिका ब्र.कु. कुलदीप दीदी, हिसार,हरियाणा सबज़ोन संचालिका ब्र.कु. रमेश दीदी, ब्र.कु. रजनी दीदी, महापौर नंदा जिचकार, जिला परिषद अध्यक्ष निशा सावरकर, सुशील अग्रवाल, ब्रह्माकुमारीज़ के युवा प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्र.कु. आत्मप्रकाश, ब्र.कु. भरत, सांसद विकास म्हात्मे, पूर्व सांसद अजय संचेती, विधायक डॉ. मिलिंद माने, विधायक परिणय फुके, मनपा स्थायी समिति अध्यक्ष वीरेन्द्र कुकरेजा, पूर्व विधायक मोहन मते प्रमुखता से उपस्थित थे। इस अवसर पर माउण्ट आबू से एक सौ आठ ब्रह्माकुमार भाई बहनें आये। दादीजी ने दिवंगत ब्र.कु. पुष्पारानी दीदी,पूर्व विदर्भ उपक्षेत्रीय संचालिका को विश्व शांति सरोवर की संकल्पना हेतु हृदय से याद किया। ब्र.कु. संतोष दीदी ने कहा कि नागपुर देश का केन्द्रबिन्दु होने के कारण यहां से पूरी दुनिया में सेवाएं होंगी और संसार के लाखों भाई बहनों को आध्यात्मिक लाभ प्राप्त होगा।

शिकागो से विश्व हिन्दु कांग्रेस के कार्यक्रम से आईं ब्र.कु. उषा दीदी ने कहा कि विदर्भ की धरनी को इतना बड़ा रिट्रीट सेंटर मिला। जितना परिवार बढ़ता है उतनी खुशी बढ़ती है। संचालन ब्र.कु. मनीषा ने किया।

ब्र.कु. प्रेम प्रकाश ने भूमिदाता सुशील अग्रवाल का तन मन धन से विश्व शांति सरोवर में प्रमुखता देने हेतु आभार माना। सुशील अग्रवाल, आर्किटेक्ट सत्येन्द्र गुप्ता, स्ट्रक्चरल कन्सलटेंट डॉ. दिलीप मसे, एम.ई.पी. कन्सलटेंट शंकर घिमे, इलेक्ट्रिकल कन्सलटेंट जीतेन्द्र राहंगडाले, प्रोजेक्ट मैनेजमेंट कन्सलटेंट प्रकाश तलोले ने दादी को चांदी का कलश भेंट किया।

ब्रह्माकुमारीज़ पैदा कर रहा है आध्यात्मिकता की लहर : बावनकुले

पालकमंत्री बावनकुले ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ के अलावा कोई भी आध्यात्मिकता की लहर पैदा नहीं कर सकता। उन्होंने इस परिसर को सौर ऊर्जा से लैस करने के साथ हर कार्य में सहयोग का आश्वासन दिया।

दिव्य समर्पण समारोह

राजयोग सेवा के लिए जिन्होंने अपना जीवन समर्पित करने का संकल्प किया, ऐसी नौ बहनों का अलौकिक दिव्य समर्पण समारोह इस प्रसंग में आयोजित किया गया।

विश्व शांति सरोवर, आध्यात्मिकता और श्रेष्ठ संस्कार जगाने में कारगर : गडकरी

'वैश्विक ज्ञानोदय से स्वर्णिम संसार' विषय पर पहले आध्यात्मिक स्नेह मिलन कार्यक्रम में केन्द्रीय भूतल परिवहन मंत्री माननीय नितिन गडकरी ने विश्व शांति सरोवर की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह मानव के अंदर आध्यात्मिकता और श्रेष्ठ संस्कार जगाने में कारगर सिद्ध होगा। ब्रह्माकुमारीज़ ने जीवन जीने का सही मार्ग बताया है। इस आध्यात्मिक मार्ग से ही संस्कार परिवर्तन होगा। ब्रह्माकुमारीज़ का काम है अपने साथ दूसरों का भी श्रेष्ठ परिवर्तन करना।

पूर्व सांसद विजय दर्डा ने कहा कि विश्व शांति सरोवर से निकला विश्व शांति का संदेश सारे विश्व में फैलेगा।

कार्यक्रम में दादी जानकी, महा नगरपालिका स्थायी समिति के अध्यक्ष वीरेन्द्र कुकरेजा, ब्र.कु. ऊषा प्रमुख रूप से उपस्थित थे। साथ ही समाज के सैकड़ों अति विशिष्ट महानुभाव उपस्थित थे।

झलकियां

जादुई हार और गुलदस्ते से स्वागत

» जादूगर प्रशांत भावसार ने जादू के प्रयोग से हार और गुलदस्ते बनाकर दादीजी का स्वागत किया।

» जरीपटका सेवाकेन्द्र के बच्चों द्वारा सुंदर सिंधी नृत्य प्रस्तुत किया गया। शिवलाल भाई ने गीतों की पैरोडी प्रस्तुत की।

» ब्र.कु. युगरतन ने सुंदर गीतों की प्रस्तुति दी।

» कार्यक्रम का संचालन कामठी सेवाकेन्द्र की ब्र.कु. प्रेमलता दीदी किया।

» जामठा स्टेडियम से संदेश सिटी और संदेश सिटी से विश्व शांति सरोवर तक श्वेत वस्त्रधारियों का हुजूम बड़े पैमाने पर नज़र आ रहा था।

» विश्व शांति सरोवर के भव्य सभागृह को दुल्हन की तरह सजाया गया था।

» उद्घाटन समारोह में शरीक हुए पंद्रह हज़ार लोग।

आज के तनाव और भागदौड़ भरे जीवन में मन को सच्ची शांति की अनुभूति कराने के उद्देश्य से विश्व शांति सरोवर में...

भारत के हृदय स्थल नागपुर में...
विश्व शांति सरोवर, रिट्रीट एवं ट्रेनिंग सेंटर

मुख्य आकर्षण

- साढ़े तीन हज़ार लोगों हेतु स्तम्भ रहित हार्मनी हॉल
- सेमिनार हॉल
- आध्यात्मिक आर्ट गैलरी
- आध्यात्मिक लेज़र शो
- साहित्य विभाग
- मेडिटेशन रूम
- दो सौ लोगों की उत्तम आवासीय व्यवस्था

सेवा योजनायें

- राजयोग शिविर
- व्यसनमुक्ति शिविर
- महिला सशक्तिकरण
- बाल विकास शिविर
- युवा उत्थान कार्यक्रम
- तनाव मुक्ति शिविर
- विभिन्न वर्गीय सेमिनार

कसौटियों पर राजऋषि

संसार में यदि उच्चता को पाना है, तो कुछ असाधारण करके ही पाया जा सकता है। हम शास्त्रों में कई बार ये शब्द पढ़ते आये जिसका ताल्लुक हमारे वर्तमान जीवन से है। वो शब्द है, राजऋषि। राजऋषि शब्द दो अर्थ लिये हुए है। राज+ऋषि। तो ये दोनों, एक ओर राज माना भाग्य और ऋषि माना त्याग। और अधिक जानें तो ऋषि अर्थात् बेहद का वैराग्य। सर्व अधिकार भी और बेहद के वैरागी भी। जब ये जीवन में संतुलित रूप में रहता है, तब ही हम बाह्यता के प्रभाव से मुक्त और सबके प्रिय भी रह सकते हैं। तब ये दोनों ही लक्षण हमारे बोल और कर्म में सदा साथ साथ झलकेंगे।

वर्तमान में स्वराज्य अर्थात् स्व का इन कर्मेन्द्रियों पर राज्य। इसको कहते हैं स्वराज्य। और वह है भविष्य का डबल राज्य। स्व पर राज्य और विश्व का राज्य। वर्तमान में जितना राज्य का नशा, उतना ही बेहद का वैराग्य।

ऋषि और राज ये दोनों ही स्मृति में सदा बैलेन्स के रूप में रहता है, तब ही ब्लेसिंग के पात्र बनते हैं। पर होता क्या है, चलते चलते हम इसका संतुलन बनाये रखने में कहीं ऊपर नीचे हो जाते हैं। परिणामस्वरूप जो हमें ब्लेसिंग चाहिए, वह हमसे थोड़ी सी दूर हो जाती है।

- ब्र.कु. गंगाधर

सबसे बड़ी बात, ऋषि माना ही इस दुनिया से अलिप्त। माना जैसे कि दुनिया से स्वयं मर चुके हैं। ऐसा अनुभव हर घड़ी होता रहेगा। सारी आत्मायें जैसे कि मूर्छित नज़र आयेंगी। ये सब सिर्फ कहने मात्र तक तो नहीं होगा ना। ये सब मरे पड़े हैं जैसे कि कब्रिस्तान। जब तक ऐसा अनुभव नहीं होता, तब तक बेहद के वैरागी नहीं बन सकेंगे। आजकल दुनिया में भी हद के वैरागी जंगल में या शमशान में जाते हैं। इसलिए तो गायन है शमशानी वैराग्य। तो जब तक ये दुनिया शमशान है, ऐसा अनुभव नहीं होगा, तब तक सदा काल के बेहद का वैराग्य, ये अनुभव कैसे कर सकेंगे?

अगर हम ऐसे राजऋषि बनना चाहते हैं, तो अपने आपसे हर घड़ी पूछना होगा कि मैं ऋषि बना हूँ? ऐसे अपने आप से बातें कर अपने को निश्चयबुद्धि बनाना है। साथ ही साथ अधिकार की खुशी में रहेंगे तो राजऋषि बनने के लिए जितना ही राज्य का नशा, उतना ही बेहद के वैराग्य के नज़ारे, दोनों साथ साथ अनुभव होंगे।

यहां वर्तमान में जितना कब्रिस्तान अनुभव होगा, उतना ही परिस्तान सामने दिखाई देगा। त्याग के साथ साथ भाग्य भी स्पष्ट सामने दिखाई देगा। सम्पूर्ण राजऋषि स्थित अर्थात् नशा और निशाना(लक्ष्य) दोनों ही स्पष्ट होंगे। निशाना अर्थात् अपनी सम्पूर्ण स्टेज। ये सम्पूर्ण स्टेज रूहानी रूहाब में बिल्कुल सामने दिखाई देगी जैसे कि स्थूल नेत्रों के सामने दिखाई देती है। जब सामने दिखाई देती है, तो फिर संकल्प भी नहीं उठेगा कि यह वस्तु है कि नहीं है, क्या है व कैसी है। तब अपने आप में अनिश्चय नहीं होगा कि मैं बनूंगा या नहीं बनूंगा। ये प्रश्न ही समाप्त हो जायेंगे। अपनी सम्पूर्ण स्टेज की निशानियां स्वयं में स्पष्ट नज़र आयेंगी।

जो राजऋषि होंगे, उनकी निशानियां क्या होंगी, उसे हम छः कसौटियों पर देखें...

पहली निशानी, दुनिया के किसी भी व्यक्ति या वैभव से संकल्प मात्र व स्वप्न मात्र भी लगाव नहीं होगा। सदा स्वयं को कलियुगी दुनिया से किनारा करने वाले संगमयुगी समझेंगे।

दूसरी निशानी, सारी सृष्टि की कैसी भी आत्माओं को कल्याण और रहम की दृष्टि से देखेंगे।

तीसरी निशानी, सदा स्वयं को परमात्मा के समान सेवाधारी अनुभव करेंगे।

चौथी निशानी, विजय मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, ये रग रग में आलोकित होगा। जिसके कारण हर कर्म में निश्चय का प्रत्यक्ष स्वरूप, विजय सदा अनुभव करेंगे।

पाँचवी निशानी, वे तीनों लोकों के तख्तनशीन अनुभव करेंगे। त्रिकालदर्शीपन की स्मृतिस्वरूप होने के कारण कर्म के तीनों कालों को जानने वाले हर कर्म को श्रेष्ठ कर्म व सुकर्मी बनायेंगे। विकर्म का खाता जैसे कि समाप्त हुआ अनुभव होगा। हर कार्य, हर संकल्प सिद्ध हुआ ही पड़ा है, ऐसा सदा अनुभव करेंगे।

छठवीं निशानी, पुराने संस्कार और स्वभाव से उपराम अनुभव करेंगे। साथ ही सदा साक्षीपन की सीट पर स्वयं को सेट हुआ अनुभव करेंगे। यह हैं उपरोक्त निशानियां भी और निशाने अर्थात् लक्ष्य भी।

तो आप भी राजऋषि के टाइटल से अपने आप को आलोकित करना चाहते हैं ना! तो इसके लिए रोज़ दिन में कम से कम पाँच बार इस स्थिति का गहराई से अभ्यास करें। तब हर समय वो स्मृति आपकी परिपक्वता की ओर अग्रसर होती जायेगी और एक समय आयेगा कि वो आपकी नैचुरल नेचर बन जायेगी। तो अब दिवाली आ रही है, तो इस दिवाली पर अपने आत्मदीप की लौ को इस स्मृति में लवलीन बनाकर जलाये रखेंगे। इस तरह से अभ्यास करें कि हम जहां पहुंचना चाहते हैं, वो हमारे कर्म से, बोल से और संकल्प से झलकते रहना चाहिए। इसी झलक और फलक से अकल्याण, कल्याण में तबदील होगा। तो आइये हम सभी इस अभ्यास में जुट जायें और जिस प्रकार दिवाली में नये वस्त्र पहनते हैं, उसी तरह नये और मधुर संकल्पों के वस्त्र धारण कर दिवाली मनायें।

चारो सब्जेक्ट में फुल मार्क्स के लिए फॉरगिव एंड फॉरगेट

सब एक दो को देखके खुश हो गये, मैं आपको देख खुश, इनको देख खुश, हम भी खुश, ऐसे सब खुश हैं ना। सर्व गुण सम्पन्न बनना है तो खुश रहना है, चाहे कुछ भी हो जाए...। उसके लिए क्या भी है कोई बात नहीं, कैसी भी बात को सोचके बड़ा नहीं बनाना है। बड़ी बात छोटी हो जाए।

बाबा के कुछ शब्द ऐसे मीठे हैं, खींचने वाले हैं, जिसके सहारे हमारी जीवन यात्रा सफल हो रही है। हम सब यात्री हैं ना, जा रहे हैं अपने घर में। बाकी थोड़ा है, जम्प लगाके पहुंचना है। पुरानी दुनिया, पाँच तत्वों की दुनिया सारी सतोप्रधान बन रही है, हमको सतोगुणी बनना है। उसमें कभी कोई भूले नहीं, फॉरगिव एंड फॉरगेट। मेरे से कोई भूल हुई या और किसी से कुछ भूल हुई, भूल जाओ, सबसे सयाना, सच्चा और अच्छा बनना है तो भूलों को भूल जाओ, क्योंकि जो मिनट पूरा हुआ फिर कल्प बाद होगा। जो हुआ सो ड्रामा। यह फॉरगिव और फॉरगेट वाला चारो सब्जेक्ट में फुल मार्क्स ले सकता है। कभी याद नहीं करेगा कि कल इसने यह किया था... शान्ति से काम लो माना शक्ति आ गई। बोला, रिपीट किया, यह दो कान इसलिए नहीं हैं। तो यह दो कान भगवान की बात सुनने के लिए हैं, यह दो आँखें हैं बाबा को देखने के लिए। बाबा परमात्मा है। मेरी बहन है या भाई है पर है आत्मा। रूहानी दृष्टि बड़ी राहत देती है, ताकत देती है। और मैं यहाँ आपको सामने देखके खुश हूँ। बाबा ने शक्ति भवन में जो कुटिया दी है, वहाँ कोई कभी कभी दो मिनट के लिए भी बाजू में आके बैठते हैं तो उन्हें अपनेपन की फीलिंग आ जाती है। बाबा ने अपना तो बनाया, पर फीलिंग भी अपनेपन की हो। अभी सारी सभा को देखो कितना अपनापन लग रहा है, कितना अच्छा लग रहा है।

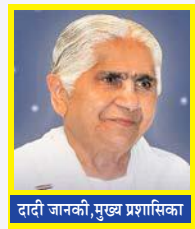
दादी जानकी,मुख्य प्रशासिका

जब दिल में खुशी होती है तो वाणी मीठी और मधुर हो जाती है। बाबा की मीठी वाणी ने ही तो सारे यज्ञ का काम किया है। जैसे बाबा मीठे मीठे शब्दों में सुनाता था, वही और वैसे ही हम सबने सुनाया है, तब तो इतने सेंटर खुले हैं। कभी भी किसी के लिए कोई कमी-कमज़ोरी हमारे मन, चित्त में न हो, यह सम्भालना है। अन्त मते सो गते का ख्याल है। तो फॉरगिव एंड फॉरगेट यह दो शब्द सभी याद रखना।

अभी यात्रा पूरी हो गई है, फिर कल्प के बाद ऐसे ही यहाँ बैठेंगे। सेम, कल्प-कल्प, कोई फर्क नहीं होगा। यह खेल है। बाबा ने यह जो कल्प कल्प की नॉलेज दी है, उससे अतीन्द्रिय सुख पाया है, जिससे कर्मेन्द्रियों की चंचलता खत्म यानि शांत हो गई है। इच्छा मात्रम अविद्या। मन में कोई ख्याल ही नहीं, क्या करूँ, कैसे करूँ। किसी बात की चिंता-फिकर भी नहीं। हर समय निश्चिंत हैं।

संगमयुगी जीवन का आधार-हिम्मत

मधुबन में सभी बाबा की मीठी-मीठी बातें सुनकर बाबा के प्यार में समा जाते हैं। यहाँ पढ़ाई की, अभी वहाँ जाकर पेपर देना। आप जहाँ भी जायेंगे वहाँ ही आपका प्रैक्टिकल पेपर होगा। पेपर देने में तो खुशी होती है, क्योंकि पेपर ही क्लास को आगे बढ़ाता है। लेकिन कोई पेपर देखकर थोड़ा कन्फ्यूज़ हो जाते हैं - यह क्यों? यह क्या? अभी तक पेपर आते रहेंगे? लेकिन बाबा ने फाइनल बता दिया है कि पेपर तो अंत तक आयेंगे और हम अंत में पास विद् ऑनर होंगे। फेल तो होंगे ही नहीं, क्योंकि हम बाबा के बच्चे बने हैं तो बाबा मदद करते हैं, हिम्मत से ही बाबा की मदद ले सकते हैं। सिर्फ हमको इसमें अटेंशन क्या देना है, पेपर कितना भी बड़ा हो लेकिन हिम्मत नहीं हारनी है। थोड़ा भी दिल में क्वेश्चन होता है तो हिम्मत कम हो जाती है। इसलिए बाबा कहते हैं हिम्मते बच्चे, मददे बाप। लेकिन कभी-कभी उल्टा कर देते हैं। कहते हैं - मदद बाप देवे तो हिम्मत आवे तो यह रॉन्ग हो जाता है।

दादी हृदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

पहले है हिम्मते बच्चे, फिर है मददे बाप! तो हिम्मत ही वरदान व शक्तियाँ लेने का आधार है। इसलिए हिम्मत नहीं छोड़नी चाहिए, क्योंकि हिम्मत से ही बाबा की मदद मिलती है।

दूसरी बात, बाबा हमारे साथ कम्बाइन्ड हैं तो हम कमज़ोर हो नहीं सकते, क्योंकि साथी सर्वशक्तिमान है। जब सर्वशक्तिमान बाबा हमारे साथ हैं तो हम कमज़ोर भी हिम्मत वाले बन जाते हैं। लेकिन बाबा ने कहा, बच्चे बाबा के साथ बहुत खेल करते हैं। कोई बात आती है, कोई समस्या या कोई परिस्थिति आती है तो क्या करते हैं? मुँह फेर देते, इसलिए बाबा का साथ छूट जाता है।

लेकिन अगर यह एक बात भी याद रहे कि बाबा हमारे साथ हैं तो हमको क्या परवाह हैं! हम माया से क्यों डरें! जब सर्वशक्तिमान हमारे साथ है तो माया उसके आगे क्या है! हम कमज़ोर हैं तो सोचेंगे कि माया का रूप बड़ा है। लेकिन भल हम छोटे हैं, पर हमारा साथी बाबा तो बहुत बड़ा है। उसके आगे माया क्या है! चींटी! वह भी ज़िंदा नहीं मरी हुई। इसलिए बाबा कहते हैं कि हिम्मत नहीं हारो, हिम्मत हमेशा रखो। कुछ भी हो जाए लेकिन अपना पुरूषार्थ करते रहो और योग में रहो। हिम्मत कभी भी नहीं छोड़नी चाहिए। 60 साल के अनुभवों में हमने देखा है कि हिम्मत रखने से कई कार्य ऐसे हुए हैं जैसे असंभव से संभव, लेकिन पेपर आता ज़रूर है, सिर्फ हम घबरायें नहीं। हिम्मत का एक पाँव आप उठायें तो बाबा पदम कदम मदद करेगा। लेकिन उल्टा नहीं करना, बाबा मदद दे तो मैं कदम उठाऊं, नहीं, यह उल्टा है, पहले मेरी हिम्मत फिर बाबा की मदद तो क्या नहीं हो सकता है।

आखिर भी हम मा.सर्वशक्तिमान हैं, सिर्फ यह निश्चय अपने में होना चाहिये। बाबा में निश्चय तो है लेकिन बाबा के निश्चय के साथ-साथ अपने में भी निश्चय चाहिए, निश्चय को चारो तरफ से पक्का करो। एक बाबा में, दूसरा अपने में निश्चय, तीसरा ड्रामा में, चौथा ब्राह्मण परिवार में निश्चय, एक भी निश्चय ढ़ीला हो तो हलचल ज़रूर होगी, हिलने वाली चीज़ हिल हिल कर टूटेगी। हम ब्राह्मणों को सिर्फ बाबा से प्यार है। बाबा के बिना संसार नहीं, बाबा ही हमारा संसार है तो संसार के बिना कहाँ जायेंगे!

संसार में दो चीज़ें होती हैं - एक व्यक्ति माना आत्माएं और दूसरा वस्तु माना चीज़ें, तो हमारा सम्बंध भी बाबा से और जो प्राप्ति चाहिए, वह भी बाबा से, तो संसार ही बाबा हो गया और कोई है ही नहीं।

हमें सदा क्षीरखण्ड होकर ही रहना है

बाबा कहते बच्चे सदा आज्ञाकारी बनो। आज्ञाकारी अर्थात् हाँ जी, यही हमारा साइन है। जो यहाँ हाँ जी, हाँ जी करेंगे, उनकी वहाँ हाँ जी-हाँ जी होगी। हाँ जी करने वाले कभी डगमग नहीं हो सकते। क्यों, क्या, कैसे... इन प्रश्नों में वे अपना माथा गर्म नहीं करेंगे। उनका दिमाग शीतल कुण्ड होगा, क्योंकि हाँ जी का पाठ गर्मी निकाल देता है। शीतल काया वाले योगी बन जाते हैं।

मेरे दिल में सबके लिए रिस्पेक्ट हो। रिस्पेक्ट वही रख सकते जिनके अंदर शुभ भावना है। अगर अनुमान और नफ़रत होगी तो प्यार भी गंवायेंगे, मान भी गंवायेंगे। युनिटी भी नहीं रह सकेगी। भल तुम्हें गिराने लिए कोई ने गड्ढ़ा खोदा हो, लेकिन अगर तुम सच्चे हो, तुम्हारे दिल में उसके प्रति शुभ भावना है तो बाबा तुम्हारी रक्षा ज़रूर करेगा। तुम्हें बचा लेगा। अंदर में कभी भी अशुभ भाव न हो। ऐसे नहीं सोचो-देखना यह मेरे लिए ऐसा करता, धर्मराज बाबा इसे कितना दण्ड देंगे। मैं कोई श्राप देने वाला दुर्वासा नहीं हूँ। मैं क्यों कहूँ यह मुझे तंग करता- देखना इसकी क्या गति होगी! मैं क्यों बुरा सोचूं! अगर मैंने अशुभ सोचा तो मुझे उसका सौ गुणा दण्ड मिलेगा, क्योंकि मैं दुर्वासा बनी। राजयोगी दुर्वासा नहीं बन सकते। आप अपनी ऐसी स्थिति रखो तो कभी इन्द्रियों की चंचलता आयेगी ही नहीं। तुम बाबा को मनाओ तो आपेही सब मान जायेंगे। कई हैं जो भावना रखते सर्विस की और करते हैं डिससर्विस। आपस में नहीं बनती तो लड़ पड़ते। कहेंगे मुझे मान नहीं मिलता, उसे मिलता मुझे क्यों नहीं मिलता।

दादी प्रकाशमणि, पूर्व मुख्य प्रशासिका

हमें बाबा ने श्रीमत दी है- बच्चे क्षीरखण्ड होकर रहो। स्वप्न में भी लूनपानी (खारा पानी) नहीं होना। मैं क्षीरखण्ड वाली लूनपानी क्यों होती! अगर लूनपानी होते तो ब्रह्माकुमार कुमारी कहला नहीं सकते। मेरा काम है दूध-चीनी होकर रहना। अगर मेरे में नमक होगा तो दूसरे भी मेरे ऊपर नमक डालेंगे। लूनपानी होने का मुख्य कारण है देह-अभिमान। अगर मैं इस दुश्मन से किनारा कर क्षीरखण्ड रहूँ तो कोई भी बात मेरे सामने आयेगी ही नहीं। आयेगी तो हवा की तरह चली जायेगी। सदा क्षीरखण्ड रहो माना एकता में, युनिटी में रहो।

पढ़ाई छोड़ना माना लूला लंगड़ा बनना। मुरली में बाबा ने जो भी श्रीमत दी है, उसे पालन करने की कितनी शक्ति है? मेरा सारा व्यवहार श्रीमत के अंदर है? मुझे श्रीमत है - तुम देहधारी की आकर्षण में नहीं जाओ। अगर आकर्षण होती तो वह श्रीमत की लकीर छोड़ता। उन्हें रावण ज़रूर अपनी शोकवाटिका में ले जायेगा। हमें श्रीमत है तुम अपना तन-मन-धन बाबा की सेवा में लगाओ। अपनी दिनचर्या को श्रीमत के अनुसार चेक करो। ईर्ष्या के वश कभी भी किसी को गिराने का ख्याल नहीं करो। अगर स्वयं को चढ़ाने का संकल्प और दूसरे को गिराने का संकल्प है तो यह बहुत बड़ा पाप है।

भक्ति में कहते हैं हृदय में भगवान बैठा है। यह हृदय हमारे बाबा का घर है। जिनके हृदय में प्रेम है, उनके हृदय में बाबा की याद है। जिनके हृदय में बाबा है, उनके हृदय में बाबा के सब रत्न हैं। बाबा के सब फूल हैं। अगर कहते यह मेरा स्टूडेंट... बाबा कहता मेरा कहना भी बहुत बड़ा पाप है। सब बाबा के स्टूडेंट हैं। बाबा के कहने पर चल रहे हैं फिर तुम क्यों कहती- यह मेरा स्टूडेंट तुम्हारे सेंटर पर नहीं जा सकता। मैं तो कहती जो ऐसा सोचते वह बहुत बड़ा पाप करते हैं। चुम्बक हमारा बाबा है, चलाने वाला बाबा है। बाबा के सब प्यारे बच्चे हैं। बेहद की भावना रखो। हद में नहीं आओ। मैं और मेरेपन की हदें बहुत नुकसान करती हैं, अब इन हदों से बाहर निकलो। जैसे बाबा बेहद का है, ऐसे बेहद दिल वाले बनो।

इसलिए है दिवाली इतनी खास !

दीपावली भारत में हिंदुओं द्वारा मनाया जाने वाला सबसे बड़ा त्योहार है। दीपों का खास पर्व होने के कारण इसे दीपावली या दिवाली नाम दिया गया है। दीपावली का मतलब होता है, दीपों की अवली यानी पंक्ति। इस प्रकार दीपों की पंक्तियों से सुसज्जित इस त्योहार को दीपावली कहा जाता है। कार्तिक माह की अमावस्या को मनाया जाने वाला यह महापर्व, अंधेरी रात को असंख्य दीपों की रोशनी से प्रकाशमय कर देता है।

दीप जलाने की प्रथा के पीछे अलग अलग कारण या कहानियां हैं। हिन्दु मान्यताओं में राम भक्तों के अनुसार कार्तिक अमावस्या को श्रीराम चन्द्र जी चौदह वर्ष का वनवास काटकर तथा आसुरी वृत्तियों के प्रतीक रावण का संहार करके अयोध्या लौटे थे। आज के परिदृश्य में आसुरी प्रवृत्तियां जहाँ तहाँ दिखाई पड़ती हैं। गोया मानव मात्र में थोड़ी या ज़्यादा मात्रा में ये वृत्तियों में बसकर प्रवृत्तियों में दिखाई देती हैं।

इस बार दीपावली के पूर्व इसपर विजय प्राप्त कर हम दीपावली मनायें तो कैसा होगा! हो सकता है ना? या अभी भी सोचना है? नहीं, अब हमें स्वयं में आत्म दीप जगाना है, जिसमें अच्छाइयों और देवत्व के गुणों को रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में स्थान देना है। आज आसुरी वृत्तियों से हम खुद भी दुःखी हैं और हमारे द्वारा दूसरों को भी दुख ही मिलता है, तो ऐसे रावण या आसुरी वृत्तियों को हमें हमेशा के लिए समाप्त करना है। करेंगे ना? तो इस मान्यता को अपने जीवन से जोड़कर हम चलेंगे तो अवश्य परमात्मा की मदद से हम इन प्रवृत्तियों को निरस्त कर सकेंगे।

ऐसी ही कुछ अन्य मान्यताएँ

कृष्ण भक्ति धारा के लोगों का मत है कि इस दिन श्रीकृष्ण ने अत्याचारी राजा नरकासुर का वध किया था। इस नृशंस के वध से जनता में अपार हर्ष फैल गया और प्रसन्नता से भरे लोगों ने घी के दीये जलाये। अब सोचने की बात है कि नरकासुर नाम का कोई प्राणी हो सकता है? नरकासुर माना हमारा जीवन, जो आसुरी प्रवृत्तियों के कारण नर्क के समान बन गया है, जहाँ दुःख ही दुःख है, उसके रूपक के रूप में ही नरकासुर का नाम दिया गया है। तो हम भी अपने जीवन में झांककर देखें कि यदि कोई ऐसी प्रवृत्ति है जिसने हमें तंग करके रख दिया है, तो हमें भी उसे निकालना होगा। इसने ना सिर्फ मुझे तंग किया है, पर मेरे परिवार, मेरे साथी या जहां भी मैं हूँ, वो प्रवृत्तियां उसी रूप में विषैले बीज ही बोती हैं। परिणामस्वरूप हमें बदले में वो ही मिलता है। ये बात हमें समझनी है, और समझ के साथ इस त्योहार को आत्मदीप जलाकर मनायें।

दीपावली के दिन की खास बातें...

- रावण पर राम की, अर्थात् बुराई पर अच्छाई की विजय हुई
- श्रीकृष्ण द्वारा नरकासुर वध के पश्चात् चारो ओर हर्ष और प्रसन्नता की लहर फैली
- चौबीसवें तीर्थंकर महावीर स्वामी का निर्वाण दिवस भी दीपावली
- उसी दिन ही अमृतसर में 1577 में स्वर्ण मंदिर का शिलान्यास हुआ। इसके अलावा 1619 में दीपावली के दिन सिक्खों के छठे गुरू गोविंद सिंह जी को जेल से रिहा किया गया था
- इस दिन से नेपाल में नया वर्ष शुरू होता है
- पंजाब में जन्मे स्वामी रामतीर्थ का जन्म व महाप्रयाण दीपावली के दिन ही हुआ
- महर्षि दयानंद ने भारतीय संस्कृति के महान जननायक बनकर दीपावली के दिन अजमेर के निकट अवसान लिया
- प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना का दिवस भी दीपावली ही है

जैन मतावलम्बियों के अनुसार चौबीसवें तीर्थंकर महावीर स्वामी का निर्वाण दिवस भी दीपावली को ही है।

सिक्खों के लिए भी दीपावली महत्वपूर्ण है। क्योंकि उस दिन ही अमृतसर में 1577 में स्वर्ण मंदिर का शिलान्यास हुआ था। इसके अलावा 1619 में दीपावली के दिन सिक्खों के छठे गुरू गोविंद सिंह जी को जेल से रिहा किया गया था।

नेपालियों के लिए यह त्योहार इसलिए महान है क्योंकि इस दिन से नेपाल में नया वर्ष शुरू होता है।

पंजाब में जन्मे स्वामी रामतीर्थ का जन्म व महाप्रयाण दीपावली के दिन ही हुआ। इन्होंने दीपावली के दिन गंगा तट पर स्नान करते समय ओम करते हुए समाधि ले ली।

महर्षि दयानंद ने भारतीय संस्कृति के महान जननायक बनकर दीपावली के दिन अजमेर के निकट अवसान लिया। इन्होंने आर्य समाज की स्थापना की।

विश्व को आध्यात्मिक ज्ञान से आलोकित करने वाले प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना का दिवस भी दीपावली ही है। खास बात ये है कि छोटे से समयांतर में अपनी सच्चाई और निष्ठा के बल पर ये विद्यालय सारे विश्व में ये फैल गया। इसलिए ये पर्व सभी के लिए इतना खास है।

हन्दुओं में इस दिन लक्ष्मी के पूजन का विशेष विधान है। रात्रि के समय प्रत्येक घर में धन धान्य की अधिष्ठात्री देवी महालक्ष्मी जी, विघ्न विनाशक गणेश जी तथा विद्या एवं कला की देवी सरस्वती की पूजा आराधना भी की जाती है। तो ये महान पर्व ऐसी विशेषताओं को समेटे हुए है। तो इसी यादगार स्वरूप यदि हम अपने आत्मदीप में ज्ञान का घृत डालकर सदा जागृत रखते हैं, तभी सही मायने में हमारे जीवन ज्ञान की रोशनी से श्रेष्ठ कर्म की धारा बहेगी। और हम जो चाहते हैं कि सुख शांति और समृद्धि से भरा हमारा जीवन हो, वो लक्ष्य हमारा अवश्य पूरा होगा।

त्रिपुरा। राज्यपाल महोदय कप्तान सिंह सोलंकी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. कविता।

महम-हरियाणा। माननीय मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर के चांग गांव में पहुंचने पर ईश्वरीय सौगात भेंट कर उनका स्वागत करते हुए ब्र.कु. चेतना तथा ब्र.कु. सुमन।

आगरा-शास्त्रीपुरम। अमर उजाला के सम्पादक नीरज कांत गुप्ता राही को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मधु। साथ हैं ब्र.कु. शालिनी।

गेल गांव-दिबियापुर(उ.प्र.)। गेल इंडिया लि. के चीफ जनरल मैनेजर पी.के. माटी एवं उनकी धर्मपत्नी को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् चित्र में उनके साथ ब्र.कु. कृष्णा तथा ब्र.कु. रिया।

सुन्नी-हि.प्र.। सेंट्रल जेल कण्डा,शिमला में जेल अधीक्षक सुशील कुमार ठाकुर को राखी बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शकुन्तला। साथ हैं ब्र.कु. रेवादास, ब्र.कु. जीतराम, ब्र.कु. बालकिशन तथा अन्य।

रूद्रपुर-उत्तराखण्ड। विधायक राजकुमार ठुकरसल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सूर्यमुखी।

नोएडा-उ.प्र.। डॉ. ललित बी. सिंघल,डेवलपमेंट कमिश्नर, एन.एस.ई.ज़ेड. को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रेनू।

नवरंगपुर-ओडिशा। विधायक मनोहर रंधारी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. नीलम।

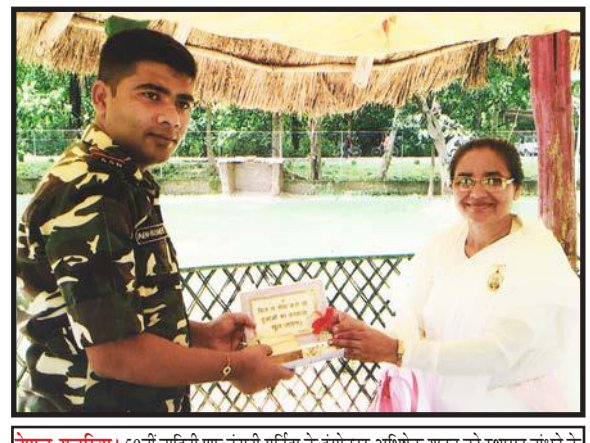

नेपाल-गुलरिया। 59वीं वाहिनी एफ कंपनी मूर्तिहा के इंस्पेक्टर अभिषेक यादव को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. गीता।

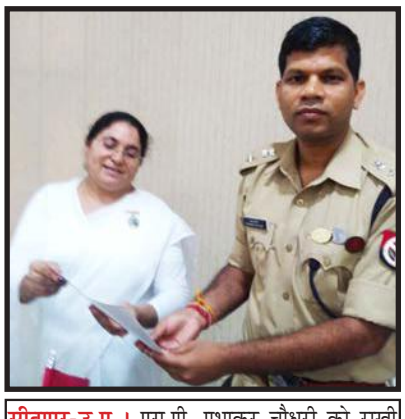

सीतापुर-उ.प्र.। एस.पी. प्रभाकर चौधरी को राखी बांधने के बाद ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. योगेश्वरी।

मैनपुरी-उ.प्र.। जिला जेल अधीक्षक हरिओम शर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. अबन्ती। साथ हैं नरेन्द्र राठौर व अन्य।

मण्डी-हि.प्र.। बिजली बोर्ड के चीफ इंजीनियर पी. एल. मासूम को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. दीपा।

नेपाल-काठमाण्डू। ब्रह्माकुमारीज़ की वार्षिक थीम 'स्वर्णिम संसार के लिए वैश्विक जागृति' के राष्ट्रीय शुभारंभ कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि माननीय उपप्रधानमंत्री तथा रक्षामंत्री ईश्वर पोखरेल, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु. आशा,ओ.आर.सी., क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. राज दीदी तथा अन्य।

लखनऊ-खुर्शीदबाग। रक्षाबंधन के अवसर पर उपमुख्यमंत्री डॉ. दिनेश शर्मा को आत्म स्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु. माधुरी। साथ हैं ब्र.कु. दिव्या तथा अन्य।

आगरा-टुण्डला(उ.प्र.)। कैबिनेट मंत्री एस.पी. सिंह बघेल को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शालू।

दिल्ली-राजौरी गार्डन। मोतीनगर के विधायक शिवराज चरण गोयल को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. शक्ति।

रामपुर-बरेली(उ.प्र.)। पुलिस अधीक्षक विपिन टाडा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. संगीता।

दालचीनी वाले दूध के अनेकफायदे

स्वास्थ्य

दूध तो हम में से कई लोग पीते हैं, फिर भी लोगों को शिकायत रहती है कि उन्हें दूध पचता नहीं है और ना ही शरीर को लगता है।

आज हम आपको एक ऐसी चीज़ बतायेंगे जिसे दूध में डालकर पीने से आपका शरीर फौलाद की तरह बन जायेगा। आप बीमारियों से कोसों दूर हो जाएंगे और एक स्वस्थ निरोगी काया पायेंगे।

ये चीज़ है दालचीनी, जिसे हम दैनिक जीवन में बहुतायत से उपयोग करते हैं, पर इसके कई फायदों से अनजान हैं। दालचीनी को इसके अनोखे गुणों के कारण वंडर स्पाइस भी कहते हैं। दालचीनी को दूध के साथ मिलाकर पीने से इसके लाभ कई गुना बढ़ जाते हैं। ये ना केवल आपके शरीर को मज़बूत करती है, बल्कि सुंदरता भी बढ़ाती है।

दालचीनी वाला दूध बनाने के लिए आपको एक ग्लास गर्म दूध में आधा चम्मच दालचीनी अच्छी तरह मिला देना है और इसका गर्म ही सेवन करना है।

इस दूध को पीने से आपको कई फायदे होंगे, जैसे...

★ आपका ब्लड शुगर लेवल रेग्युलेट रहेगा यानी डायबिटीज़ के मरीजों के लिए दालचीनी वाला दूध बहुत बहुत फायदेमंद है।

★ ये स्किन और बालों से सम्बंधित हर समस्या को दूर करता है। इसमें एंटीबैक्टीरियल गुण पाए जाते हैं जो बालों और स्किन से जुड़े रोगाणुओं को नष्ट कर देते हैं।

★ दालचीनी वाले दूध का सेवन करने से गठिया और हड्डियों से जुड़ी समस्याएं होती ही नहीं हैं, और जिन लोगों को अर्थराइटिस से सम्बंधित समस्या है उन्हें इससे आराम मिलेगा।

★ पढ़ाई करने वाले छात्रों को दालचीनी वाला दूध देने से उनकी एकाग्रता और मेमोरी पावर बढ़ती है।

★ यदि आपको नींद न आने की समस्या है, तो रोज़ रात को ये दूध पीने से आपकी ये समस्या धीरे धीरे चली जायेगी।

★ यदि आप वज़न कम करने के लिए परेशान हो रहे हैं तो रोज़ रात को दालचीनी वाला दूध पीने से आप महीने में तीन से चार किलो वज़न घटा सकते हैं।

★ दालचीनी वाले दूध का सेवन करने से आपको जीवन में कभी भी दिल की बीमारी या हार्ट स्ट्रोक का सामना नहीं करना पड़ेगा।

डॉ. समीर दवे
श्रीहरि आयुर्वेदाश्रम,अहमदाबाद,
मो. 9824617183

रक्सौल-बिहार। एस.एस.बी. एयर पोर्ट के कमाण्डेंट को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. ज्ञानू बहन। साथ हैं ब्र.कु. नीलेश तथा अन्य जवान।

नये संस्कार निर्माण में मददगार बनें

गतांक से आगे...

कभी भी दो लोगों को एक दूसरे से कम्पेयर कर ही नहीं सकते। इसका पास्ट और उसका पास्ट बिल्कुल अलग है। मान लो उस आत्मा ने पिछले कॉस्ट्यूम में एक फ्लड में शरीर छोड़ा। फ्लड आया, उसके पूरे शहर में पानी पानी हो गया। घर उसमें चला गया, उसके बच्चे उसके हाथ से खिसकते उस वक्त बह गये। खत्म हो रहा था उसमें सबकुछ और उस क्षण में उस आत्मा ने शरीर छोड़ा तो उस आत्मा के साथ पानी इज़ीक्वल टू पेन, पानी इज़ीक्वल टू लॉस, पानी इज़ीक्वल टू फियर, ये इमप्रिंट हो गया, वो आत्मा नये कॉस्ट्यूम में आ गई। सबकुछ बाहर परफेक्ट है, लेकिन वो इमप्रिंट तो है ना पानी इज़ीक्वल टू पेन, पानी इज़ीक्वल टू लॉस, अब उसको ये नहीं पता कि उसने क्या देखा था, लेकिन उसके लिए इस टाइम सिर्फ पानी इज़ीक्वल टू पेन, ये हमें कम्पैशन समझना होगा। और फिर समझकर ऐसा नहीं कि वो जीवनभर पानी से डरता रहे, लेकिन धीरे धीरे हमें उसको अनुभव कराना पड़ेगा कि पानी इज़ीक्वल टू फन, पानी इज़ीक्वल टू कम्फर्ट लेकिन वो तब होगा जब हम उसके पानी इज़ीक्वल टू पेन के संस्कार को क्रिटीसाइज़ नहीं करेंगे, उसका मज़ाक नहीं उड़ायेंगे, तब हम उसका एक नया संस्कार क्रियेट करने में मदद करेंगे।

अब पानी का डर तो समझ में आता है, लेकिन किसी को विश्वास करने से डर लगे, कोई लोगों पर शक करे, ये भी इसलिए हुआ क्योंकि पिछली बार जब उसने विश्वास किया था तो कुछ बहुत बहुत नुकसान हुआ, फिर उस आत्मा में क्या रिकॉर्ड हो गया? विश्वास इज़ीक्वल टू पेन। अब वो वाला संस्कार वो लेकर आ गया। अब वो आज हमारा स्पाउस है, हमारा कलीग है, कोई हम पर ट्रस्ट ही नहीं करता और हमें बुरा लग जाता है कि आप मुझ पर ट्रस्ट नहीं करते! मैंने तो सबकुछ सही किया। वो मुझपर ट्रस्ट करते नहीं, उसके संस्कार से पेन जुड़ा हुआ है। लेकिन जब हमें ये बुरा लग जाता है कि

-ब्र.कु.शिवानी,जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

तुम मुझ पर ट्रस्ट नहीं करते तो हम रोने लग जाते हैं। जब हम ही रोने लग जाते हैं तो हम भी गये दर्द में और उनका वो संस्कार क्या हो गया? और दर्द। हरेक को आज जब देखेंगे ना सारा दिन, ये होमवर्क करना है हमें आज, सारा दिन तो अपने नज़रिये को थोड़ा सा चेंज करना है। ये कौन है, एक आत्मा जो अपनी लम्बी यात्रा पर है। अलग अलग दृश्य, अलग अलग रिकॉर्डिंग, अलग अलग संस्कार, उनका संस्कार गलत नहीं है, उनका संस्कार मेरे संस्कार से अलग है, किसी को भी गलत नहीं बोलना। वो मेरे संस्कार से अलग है और हमारा मंत्र क्या है? वो जैसे हैं हम उन्हें स्वीकार करें। स्वीकार करने का ये मतलब नहीं कि हम उनको चेंज करने में हेल्प नहीं करेंगे, स्वीकार करना मतलब संस्कार को देखकर यहाँ पर कोई इरीटेशन, कोई डिस्टर्बेंस, कोई क्रेश्चन मार्क, निंदा ये सब नहीं हो। हमारा मन उनके संस्कार को देखते हुए भी स्थिर रहे।

फिल्लौर-पंजाब। रक्षाबंधन के शुभ अवसर पर एस.एम.ओ. डॉ. जतिन्दर सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. राजकुमारी।

बरपाली-ओडिशा। तहसीलदार युधिष्ठिर मेहर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. ममिना।

जयपुर-राजापार्क। संगानेर सदर थानाधिकारी सवाई सिंह को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. पूजा।

जालंधर-पंजाब। डेप्युटी कमिश्नर वीरेन्द्र कुमार शर्मा को राखी बांधने से पूर्व आत्म स्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु. सीमा।

पटनागढ़-ओडिशा। तहसीलदार पुष्पांजलि पण्डा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. गीता।

विंदकी-उ.प्र.। एस.डी.एम. सुशील कुमार व उनकी धर्मपत्नी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सीता। साथ हैं ब्र.कु. दिव्या।

पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

हमें आज इस बात को थोड़ा अच्छी तरह से समझ लेना है कि हमारे वैल्यूज़, वर्च्यूज़, हमारी क्लाविटी 'गुण' तथा पावर 'शक्तियों' में अन्तर क्या है तथा इनकी सही परख क्या है? इसको एक उदाहरण से अच्छी तरह समझा जा सकता है। आपने फिल्में देखी होंगी, जिसमें कोई एक ऐसा चरित्र जो इन्सपेक्टर की भूमिका में है, उसके अन्दर ईमानदारी का गुण भरा हुआ है। उसके इस गुण को नष्ट करने के लिए सभी तरह तरह के साधन अपनाते हैं कि इसको कुछ रिश्वत दिया जाए। ताकि यह हमारा माल ना पकड़े। फिर भी वो नहीं टूटता तो उसको मारने के अलग अलग प्लैन्स बनाते हैं। अब यहां सोचना यह है कि एक साधारण सा इंस्पेक्टर, उसे मारना क्या बड़ी बात है, लेकिन आसान क्यों नहीं लगा, क्योंकि उसके अंदर ईमानदारी का गुण अब शक्ति का रूप ले चुका है, इसलिए उसका रिफ्लेक्शन शक्तिशाली रूप से सबके सामने आ रहा है। आप यहां यह बात देखो कि व्यक्ति की शक्ति उसके गुणों की धारणा में है, और वही व्यक्ति महान है, वही धनवान भी है। लेकिन उस गुण को शक्ति जब तक हम नहीं बनाएंगे, तब तक हम मन से शक्तिशाली नहीं बन पायेंगे। इसको हम 'जा-पा-प्र-धा' शब्द से जोड़कर समझ सकते हैं। जैसे किसी भी चीज़ को 'जा' यानि जान लेना या जानना, उसे हम मूल्य कहते हैं। लेकिन उन्हीं मूल्यों को 'पा'अर्थात् प्राप्त करना, उस पर काम करना, उसे हम वर्च्यू कहते हैं तथा उसे सभी के सामने बीच-बीच में प्रकट करना, उसकी फ्रिक्वेंसी को बढ़ाना अर्थात् क्वालिटी को निखारना तथा उसे अपने जीवन में सम्पूर्णतया धारण करना अर्थात् गुण को धारण करना ही शक्ति का रूप ले लेता है। यही शक्ति हमें विशेष बना देती है।

शक्ति व गुण, दोनों की परख तथा उसके आधार से परिवर्तन स्थायी होता है। हो सकता है कि हम कुछ उससे अलग करना चाहें, लेकिन होगा वह गुण, शक्ति के आधार से ही। विडम्बना यह है कि प्रयोग करते तो हैं, पर सफलता परसैंटेज़ में क्यों?

इसलिए शायद हम बीच-बीच में गुणों की धारणा करते करते दुनिया के प्रभाव में आकर सब कुछ तोड़ते रहते हैं, नियम मर्यादाओं पर चल नहीं पाते। और बार बार यह कहकर तसल्ली देते हैं कि इस बार हम कर लेते हैं, अगली बार से देखा जायेगा। आप बताइये हर बार गुणों को अर्थात् ईमानदारी को किसी अपने के लिए अर्थात् मोहवश छोड़ देना, ये हमेशा के लिए छोड़ने का अनुभव अवगुण भी तो बना रहा है। यही बनते बनते हमारे संस्कारों में आ जाता है। इसलिए आज हम अवगुणी होने के कारण ही शक्तिहीन हैं। शक्तिहीन अर्थात् थोड़ी थोड़ी बात पर दुनिया के लोगों का झाँसा देना, लोग हैं ही ऐसे। उनके बीच में रहकर हमें ऐसा रहना तो बड़ा मुश्किल है। मुश्किल तो है, वो तो उस समय लगता है कि मुश्किल है, लेकिन जो आपके ऊपर प्रभाव पड़ा, संस्कार बने, उसका क्या? बस आप यही सोचकर, कृपया यह धारणाएं ना तोड़ें। शक्तिशाली वही है, जो खुद से वफादार है कि क्या मैं सही हूँ, या लालच वश सब कुछ छोड़ देता हूँ। आपके मन की शक्तियाँ गुणों के आधार से काम करती हैं, सत्यता के आधार से चलती हैं, ना कि अवगुणों के आधार से। इसलिए आज इतना क्राइम बढ़ गया है, बाद में पछताते हैं कि, अरे ना करता तो। अरे, यह तो तभी सम्भव है जब हम गुणों को शक्ति बनायेंगे।

X-३ ऑफ 2018

हम देखते हैं कि जिस प्रकार फैक्ट्री में जैसा रॉ-मटीरियल डाला जाता है, वैसी ही गुणवत्ता युक्त प्रोडक्ट तैयार होता है। हमने इस दो हज़ार अठारह वर्ष में सबको हैप्पी न्यू ईयर, हैप्पी दिवाली, नया साल मुबारक कहा और अपने तथा दूसरों के लिए शुभकामनायें दी भी, ली भी और करी भी। अब देखना है कि साल भर हमने उसे कितना निभाया और कितना बढ़ाया, हमने अच्छे संकल्प कर मनाया और साल भर उन्हीं संकल्पों से हमारे जीवन रूपी फैक्ट्री में कैसा माल तैयार हुआ? जैसा संकल्प का भोजन हमने साल भर दिया होगा, वैसी ही तो प्रोडक्ट के रूप में सूरत तैयार हुई होगी। तो आइये हम इसपर थोड़ा विचार करते हैं...

इस वर्ष में कितने सुनहरे सपनों के रंग भरे या कितने कहां खड्डे में गिरे या स्वयं में कितने दाग जड़े? क्योंकि अभी एक मास दीपावली का शेष है, और दो मास नये साल को शेष है। क्योंकि अभी हम आंकलन करेंगे तो देख पायेंगे कि हमारी दो हज़ार अठारह की यात्रा किस तरफ चली थी और अब कहां पहुंची है। अगर सही दिशा में, सही गति से उस तरफ बढ़ रहे हैं, तब तो ठीक है, अन्यथा हमारे पास अभी भी वक्त है सम्भलने का। इसलिए हम आपसे ये बात कह रहे हैं कि कहीं चलते चलते राह में आई किन्हीं मुश्किलातों, कठिनाइयों या बाधाओं ने हमारी दिशा ही परिवर्तित तो नहीं कर दी! जैसे कोई स्टूडेंट साल भर पढ़ाई करता है और परीक्षा के पूर्व अपने आप से बैठकर चेक करता है कि मेरी तैयारियां पूरी हो गई हैं या नहीं। ठीक उसी तरह उसी अंदाज़ में हम भी वैसे ही इस वर्ष को देखें, ये कैसा रहा, उसका आंकलन करने का समय हमारे पास है। आंकलन करने पर हमें पता चलेगा कि हम कहां पहुंचे हैं और हमें कहां पहुंचना है, इसका अंतर हमें मालूम पड़ेगा। तो अंतर को आत्मसात कर दूरी कम कर पायेंगे।

आइये हम इस वर्ष को कसौटी की इन बिन्दुओं पर देखें और परखें...

» सबसे पहले मेरा ये साल संतोषजनक रहा? मैं इस साल के समय को सफल कर संतुष्ट हूँ? या इसमें कोई किन्तु परन्तु का भाव मन में उठता है?

» मैंने जो लक्ष्य बनाया था, और जहां पहुंचना था, जिस गति से पहुंचना था, वो बराबर चल रही है या इसमें स्पीड को बढ़ानी है या दिशा ठीक करनी है?

» समय का इंतज़ार या समय का इंतज़ाम? बरसात आने पर ही तालाब पर बांध बनाना शुरू करेंगे या बारिश से पहले कर लिया है?

» परमात्म शक्ति के साथ का फायदा इस वर्ष मैंने उठाया या इस अमूल्य अवसर को यूं ही साधारणता में समाप्त कर दिया!

» अपने आप से बैठकर वार्तालाप करें, संवाद करें, तो पता चलेगा कि मैं कहाँ हूँ। सचमुच दुनिया के आकर्षण, दुनिया के प्रलोभन के भंवर में मैं कहीं खो तो नहीं गया हूँ?

» घबराइये मत, अभी भी वक्त है। एक मास अपने पास है। तीव्र गति से अपने आप को संयमित कर नियमबद्ध बन, योजनाबद्ध होकर अपने संकल्प को सिद्धि की ओर ले जायें।

» आंकलन करने पर यदि आप पाते हो कि देर हो गई है, तब भी नाउम्मीद न बनें। अगर आप चाहते हैं तो उस दिशा में कार्य करने लग जायें जहां आप पहुंचना चाहते हैं और जिसे पाना चाहते हैं।

अगर आप इस कसौटी पर स्वयं को कसकर देखते हैं तो आप अपने जीवन से जुड़े हर प्रश्नों का हल पा लेंगे और हुई क्षति की क्षतिपूर्ति कर पायेंगे। हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आपके सपने आपके अपने बन जायेंगे। आपमें वो जज़्बा भी पैदा होगा कि मैं कर सकता हूँ और मैं कर ही लूंगा, क्योंकि अब मेरा लक्ष्य भी स्पष्ट है, गति भी तेज़ है और योजना के अनुरूप कार्य भी है।

बीकानेर-राज.। केन्द्रीय जल संसाधन गंगा विकास संसदीय कार्यमंत्री अर्जुन राम मेघवाल को राखी बांधने के पश्चात् ईश्वरीय वरदान कार्ड देते हुए ब्र.कु. कमल तथा अन्य।

कूच बिहार-प.बंगाल। सांसद पार्थ प्रतिम रॉय को राखी बांधने के बाद ईश्वरीय साहित्य देते हुए ब्र.कु. सम्पा।

देवरिया-उ.प्र.। जिलाधिकारी अमित किशोर को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् चित्र में उनके साथ ब्र.कु. अनीता, ब्र.कु. रीता तथा अन्य।

मीरगंज-बिहार। नगर निगम के उपाध्यक्ष धनंजय कुमार यादव को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुनीता।

देववंद-गुज्जरवाड़ा(उ.प्र.)। एल.आई.यू. के अधिकारी भारत भूषण जी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुधा।

दिल्ली-ओम विहार। तिहार जेल में रक्षाबंधन कार्यक्रम के दौरान सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. विमला। साथ हैं सुपरीन्टेंडेंट राजेश चौहान तथा अन्य।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-1 (2018-2019)

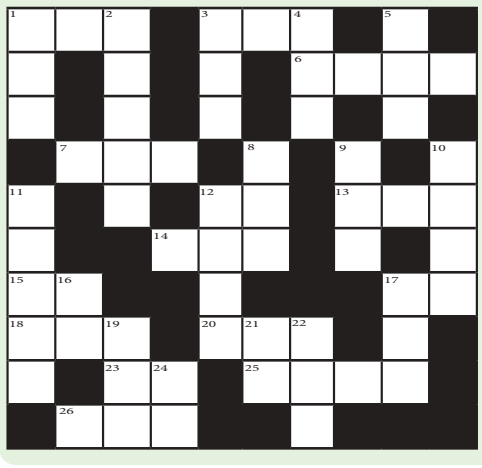

ऊपर से नीचे

1. सगा, बाप की आज्ञा को मानने वाला (3)
2. धामा खाने वाला ब्राह्मण (5)
3. पक्षी, गौरैया (3)
4. मान, इज़्ज़त, महिमा (3)
5. झूठ, तुम्हें कभी.... नहीं बोलना है (3)
8. तिराहा, अभी तुम.... पर खड़े हो (3)
9. निवास करना, ठहरना (3)
10. ज्ञान की....बन सदा टिकलू टिकलू करते रहना है (4)
11. नश्वर, यह जीवन ....है (5)
12. दिलबर, हमसफर, साथी (4)
16. कंठ, ग्रीवा, गर्दन (2)
17. यही....है दुनिया को भूल जाने की, मौसम (3)
19. खुशबू, सुगन्ध (3)
21. मित्र, सखा, दोस्त (2)
22. अनुकृति, प्रतिलिपि, ज्यों का त्यों (3)
24. आज नहीं तो.... बिखरेंगे यह बादल (2)

बायें से दायें

1. स्वामी, बालक सो.... (3)
3. दीपक, दीया, दीप (3)
6. जागीर, राज्य (4)
7. घृणित, मलिन, एक सम्प्रदाय (3)
12. वायु, बयार, समीर (2)
13. सहज, सीधा, सामान्य (3)
14. रोटी बनाने का एक साधन, धातु का दो पाल वाला यंत्र (3)
15. खंडित होना, विघटन, टूटना (2)
17. ताकत, शक्ति (2)
18. दास, नौकर, चाकर (3)
20. धरती, धरा, धरनी (3)
23. अधिकार, स्वामित्व (2)
25. ....जगाकर आई हूँ, भाग्य (4)
26. सम्पूर्ण, सारा, पूरा (3)

- ब्र.कु. राजेश,शांतिवन।

टेक्सास-यू.एस.ए.। काउंसिल जनरल ऑफ इंडिया इन यू.एस.ए. डॉ. अनुपम रे तथा उनकी धर्मपत्नी डॉ. अमित गोल्डबर्ग को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् चित्र में उनके साथ क्षेत्रीय संयोजिका ब्र.कु. डॉ. हंसा रावल तथा ब्र.कु. मार्क।

फिरोज़ाबाद-उ.प्र.। जिला जज गोविंद बल्लभ शर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सरिता। साथ हैं ब्र.कु. अंजना।

नाहन-हि.प्र.। आयुक्त सिरमौर ललित जैन को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रमा।

टोंक -राज.। रक्षाबंधन के अवसर पर आयोजित 'स्नेह मिलन' कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. अपर्णा। मंचासीन हैं नगर परिषद सभापति श्रीमति लक्ष्मी जैन, जेल अधीक्षक बद्रीलाल शर्मा, के.सी. आहूजा, ब्र.कु. बीना तथा ब्र.कु. रितू।

बाघा पुराना-मोगा(पंजाब)। डी.एस.पी. रणजीत सिंह को राखी बांधने से पूर्व आत्मस्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु. रजनी।

रामपुर खारी कुआँ-बरेली(उ.प्र.)। सी.आर.पी. ग्रुप सेंटर में जवानों को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. प्रभा। साथ हैं ब्र.कु. रितू।

पहले योगी हमेशा जंगलों और पहाड़ी की गुफाओं में जाकर रहते थे। वहाँ बैठने का उद्देश्य उन सभी सीमाओं के परे विकास करना था, जो अभी आपको बांधे हुए है। पेड़ों से सूक्ष्म विद्युत मिलती है, जिससे मन शक्तिशाली बनता है। पेड़ सभी प्रकार की नकारात्मक तरंगों को खत्म कर देते हैं। यही कारण है जितनी भी दवाइयां हैं, सभी पेड़ पौधों से ही बनती हैं। पेड़ों के नीचे बैठ कर तपस्या करते हैं तो पेड़ संकल्पों को पकड़ लेते हैं और ब्रह्माण्ड में प्रसारित कर देते हैं।

जब हम तनाव या गर्मी से सताये हुए होते हैं तो हरे भरे पेड़ों में जाने से मन को चैन मिलता है। वास्तविकता यह है कि पेड़ से निकली सूक्ष्म तरंगें मनुष्य को प्रभावित करती हैं। पेड़ों की आकर्षण शक्ति से बरसात भी होती है। वृक्षों की यह एनर्जी बहुत सूक्ष्म है, जिस पर खोज की ज़रूरत है। आज भी लोग पीपल तथा कुछ अन्य वृक्षों पर कच्चे धागे या मौली की गाँठ बांधते हैं ताकि उनकी अमुक मन्नत पूरी हो। यह धागा क्यों बांधा जाता है? हमारी अंगुलियों के पोरों, आंखों से और श्वास से, मन की एनर्जी जो हम सोचते हैं, प्रवाहित होती रहती है।

कच्चे धागे या मौली को हाथों से पकड़ते हैं, देखते हैं, संकल्प या मंत्र पढ़कर उस धागे को फूंक मारते हैं तो हवा उस धागे में रुक जाती है जो हमारे श्वास से निकली थी। इस हवा में हमारी मनोकामना के सूक्ष्म संकल्प कैद हो जाते हैं। धागे में से हवा बाहर नहीं निकलती। यह धागा पीपल पर बांधा जाता है। पीपल धागे के अंदर हवा में कैद सूक्ष्म तरंगों को पढ़ लेता है और उसे ब्रह्माण्ड में प्रसारित कर देता है। यह धागा एक कैसेट या पेन ड्राइव का काम करता है। धागे के अंदर बंद हवा में हमारी मनोकामना के विचार हर समय पेड़ के द्वारा ब्रह्माण्ड में प्रवाहित होते रहते हैं।

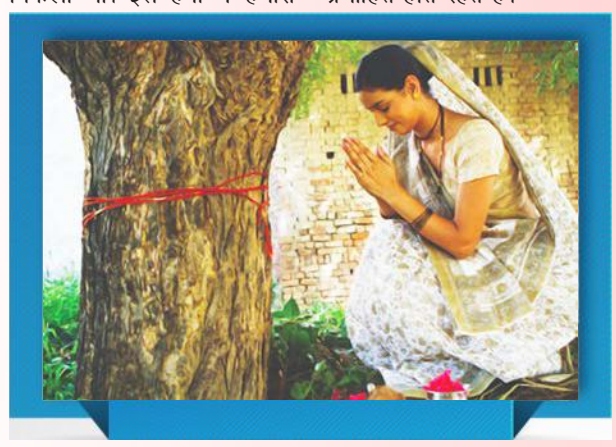

वृक्ष के नीचे साधना करते समय मन में जो एनर्जी बन रही होती है, एक तो सीधे भगवान के पास पहुंचती है, दूसरे वृक्ष भी उस एनर्जी को भगवान तक प्रसारित कर देते हैं। जिससे साधना में दोहरा फायदा होता है और हमें तीव्रता से दिव्य शक्तियां अनुभव होने लगती हैं। तीसरा हमारे शुद्ध संकल्प पेड़ द्वारा छोड़े जा रहे ऑक्सीज़न में प्रवेश कर जाते हैं और वह ऑक्सीज़न जिन लोगों तक पहुंचती है, उनकी मानसिक शुद्धता अनजाने में ही होने लगती है।

वृक्ष करते सूक्ष्म परोपकार के कार्य

- वृक्ष के नीचे साधना करते समय मन में जो एनर्जी बन रही होती है, वो सीधे भगवान के पास पहुंचती है।
- वृक्ष भी उस एनर्जी को भगवान तक प्रसारित कर देते हैं। जिससे साधना में दोहरा फायदा होता है और हमें तीव्रता से दिव्य शक्तियां अनुभव होने लगती हैं।
- हमारे शुद्ध संकल्प पेड़ द्वारा छोड़े जा रहे ऑक्सीज़न में प्रवेश कर जाते हैं और वह ऑक्सीज़न जिन लोगों तक पहुंचती है, उनकी मानसिक शुद्धता अनजाने में ही होने लगती है।

इसलिए ब्राह्मणों के लिए वर्जित है तामसिक भोजन

प्याज और लहसुन के बिना आपको खाना बेस्वाद लगता होगा, लेकिन कुछेक ब्राह्मण इससे दूरी बनाकर चलते हैं। ब्राह्मण प्याज और लहसुन से परहेज क्यों करते हैं, क्या आपके दिमाग में ये सवाल कभी कौंधा है? लोग इसके पीछे धार्मिक मान्यताओं का हवाला देते हैं, लेकिन कुछेक इसके पीछे वैज्ञानिक कारण भी बताते हैं। इस रिपोर्ट में हम आपको उन वजहों की जानकारी दे रहे हैं जिनके चलते ब्राह्मण प्याज और लहसुन से दूरी बनाते हैं।

आयुर्वेद में खाद्य पदार्थों को तीन श्रेणियों में बांटा गया है

1. सात्विक
2. राजसिक
3. तामसिक

मानसिक स्थितियों के आधार पर इन्हें हम ऐसे बांट सकते हैं

सात्विक : शांति, संयम, पवित्रता और मन की शांति जैसे गुण।

राजसिक : जुनून और खुशी जैसे गुण।

तामसिक : क्रोध, जुनून, अहंकार और विनाश जैसे गुण।

ये है वजह :

अहिंसा : प्याज और लहसुन तथा अन्य लशुनी पौधों को राजसिक और तामसिक रूप में वर्गीकृत किया गया है। जिसका मतलब है कि ये जुनून और अज्ञानता में वृद्धि करते हैं। हिंदू धर्म में हत्या (रोगाणुओं की भी) निषिद्ध है। जबकि ज़मीन के नीचे उगने वाले भोजन में समुचित सफाई की ज़रूरत होती है, जो सूक्ष्मजीवों की मौत का कारण बनता है। अतः ये मान्यता भी प्याज और लहसुन को ब्राह्मणों के लिए निषेध बनाती है, लेकिन तब सवाल आलू, मूली और गाजर पर उठता है।

अशुद्ध खाद्य : कुछ लोगों का ये भी कहना है कि मांस, प्याज और लहसुन का अधिक मात्रा में सेवन व्यवहार में बदलाव का कारण बन जाता है। शास्त्र के अनुसार लहसुन, प्याज और मशरूम ब्राह्मणों के लिए निषिद्ध हैं, क्योंकि आमतौर पर ये अशुद्धता बढ़ाते हैं और अशुद्ध खाद्य की श्रेणी में आते हैं। ब्राह्मणों को पवित्रता बनाए रखने की ज़रूरत होती है, क्योंकि वे देवताओं की पूजा करते हैं, जोकि प्रकृति में सात्विक (शुद्ध) होते हैं। और ब्राह्मण देवताओं या परमात्मा को जो भोग लगाते हैं, वो ही स्वयं भी स्वीकार करते हैं। तामसिकता की श्रेणी में आने वाले किसी भी पदार्थ का भोग देवताओं तथा परमात्मा को नहीं लगाया जाता और ना ही वे स्वीकार करते हैं।

सनातन धर्म के अनुसार : सनातन धर्म के वेद शास्त्रों के अनुसार प्याज और लहसुन जैसी सब्जियां प्रकृति प्रदत्त भावनाओं में सबसे निचले दर्जे की भावनाओं जैसे जुनून, उत्तेजना और अज्ञानता को बढ़ावा देती हैं, जिस कारण आध्यात्मिकता के मार्ग पर चलने में बाधा उत्पन्न होती है और व्यक्ति की चेतना प्रभावित होती है। इस कारण इनका सेवन नहीं करना चाहिए।

मान्यताएं : इन बातों का अब कम महत्व है, क्योंकि शहरी जीवन में तो प्राचीन परम्पराएं विलुप्त होने के कगार पर हैं और बेहद कम लोग ही इन नियमों का पालन करते हैं। आज के दौर के अधिकांश लोग, खासतौर पर युवा पीढ़ी इसे अंधविश्वास से जोड़कर देखती है या वर्तमान जीवनशैली के कारण इनका पालन नहीं कर सकती है। लेकिन आयुर्वेद के अनुसार साधू, सन्यासी, ब्रह्मचारी और सत्मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति को लहसुन प्याज का सेवन नहीं करना है।

वैज्ञानिक तौर पर इन तामसिक पदार्थों में जैसे कि प्याज और लहसुन में सल्फ्यूरिक एसिड की मात्रा अधिक होने से वो हमारी पाचन शक्ति को प्रभावित करती है तथा आँतों को नुकसान भी पहुंचाती है। ऐसे ही तामसिक श्रेणी में आने वाले दूसरे पदार्थ भी जो मनुष्य के प्रकृति पर विपरीत असर डालते हैं, हमें उनका सेवन नहीं करना चाहिए। इसलिए यदि आप अपने जीवन में सुख, शांति और प्रेम जैसे गुणों को बनाये रखना चाहते हैं, तो इन चीज़ों से परहेज करना ही होगा, अन्यथा तामसिक पदार्थ अपना कार्य कर ही लेंगे।

मिरज़ापुर-उ.प्र.। सिटी मजिस्ट्रेट पंकज वर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. बिन्दु।

जयपुर-वैशाली नगर। राजकुमारी साहिबा दिया कुमारी को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय वरदान कार्ड देते हुए ब्र.कु. सुष्मा तथा ब्र.कु. चन्द्रकला।

नरवाना-हरियाणा। एस.डी.एम. किरण सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. ममता।

मुज़फ्फरनगर-गांधीनगर(उ.प्र.)। जेल अधीक्षक ए.के. सक्सेना को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. पूनम।

ब्रह्ममुहूर्त में बरसता अमृत

ब्रह्म मुहूर्त रात्रि के अंतिम पहर का तीसरा भाग है। निद्रा त्याग के लिए यही श्रेष्ठ समय है। ब्रह्म का मतलब परम तत्व या परमधाम है और मुहूर्त यानी अनुकूल समय। दूसरे शब्दों में इसे ही अमृतवेला भी कहा जाता है। ब्रह्म मुहूर्त या अमृतवेला का विशेष महत्व है। 'अमृत वेला' शब्द का अर्थ है अमृत+वेला। 'अमृत' मतलब वह रस जो स्थायी अमरता दे और 'वेला' मतलब समय। अमृतवेला अर्थात् ऐसा समय जो जीव को चिरस्थायी अमरता देता है, जिस प्रकार अमृत का घूंट भी पी लेने से जीव की मृत्यु कभी नहीं होती, वह अमर हो जाता है, आंतरिक रूप से आनंद को पाता है, उसी प्रकार इस समय में कुछ देर भी किया गया योग अभ्यास आत्मा को उस आत्मिक आनंद की अनुभूति करा देता है जिस आनंद की अनुभूति अमृत पीने वाले को होती है। अमृतवेला यानि वो वेला जब स्वयं भगवान अपने बच्चों को अमृत पिलाने आता है और उस अमृत को जो नहीं पी पाता, यानि अमृतवेला से 'अ' हटा दें तो क्या होगा? 'अ' हटा दें तो कौनसी वेला रह जायेगी? तो जो सोये हुए लोग रहते हैं, उनके लिए 'मृतवेला' और जो आप और हम में से जो राजयोगी जागे रहते हैं, उन सबके लिए यह है 'अमृतवेला'।

इस अमृतवेला के अंदर जो सबसे पहला नियम है...

अमृतवेले की महिमा

अमृतवेले की महिमा अपरम्पार है। ये वो वक्त है जब प्रकृति पूरी तरह शांत और पावन है। उस समय ये संसार ऐसा लगता मानो वतन बना हो। हमारा अपना वतन। आत्माओं का वतन। अमृतवेला परम आत्मा शिवबाबा और आत्माओं के मिलन का समय है। परम आत्मा शिवबाबा उस समय अपने वरदानों की झोली खोल कर रखते हैं। जिस आत्मा की जितनी क्षमता, वो उतने वरदान उनसे प्राप्त कर सकती है।

अमृतपान का समय, कितने बजे शुरू होता है अमृतवेला?

दो बजे से शुरू होता है। जो दो बजे उठ पाते हैं बहुत अच्छी बात है, पर परमात्मा के कहने अनुसार साढ़े तीन बजे हम लोग उठें। थोड़ा फ्रेश होकर जागृत अवस्था में चार बजे से पौने पाँच बजे तक परमात्मा के प्यार में खो जायें। परमात्मा ने जो हमें दिया है, अवेयरनेस(जागृति) के साथ उसका धन्यवाद करें और परमात्मा ने हमपर जो आस रखी है, हमें वो जैसा देखना चाहता है, उस श्रेष्ठ संकल्प में स्थित हो जाएं। उसका एहसान मानें, रियलाइज़ करें और फील करें कि मैं कितना भाग्यवान हूँ कि मुझे परमात्मा से मिलन मनाने की विधि का सम्पूर्ण ज्ञान है। परमात्मा का बच्चा होने के नाते मैं भी उस खज़ाने का मालिक हूँ। इस तरह अपने श्रेष्ठ संकल्पों का सृजन कर परमात्मा से मिलन मनायें। किसी भी राजयोगी के जीवन की पहली मर्यादा है हम चार से पौने पाँच का सुबह सुबह का अमृतवेला कभी भी मिस ना करें। परमात्मा शिव की याद के लिए अमृतवेले का समय सर्वश्रेष्ठ है।

सामूहिक ध्यानाभ्यास के दौरान :

अमृतवेले में खास : किसी को भी पूरी तरह से चैतन्य होकर बैठना होता है। अमृतवेले के ध्यानाभ्यास के समय नींद एक बड़ी चुनौती के रूप में हमारे सामने खड़ी रहती है।

शिव बाबा जानी जाननहार होने के कारण इन बातों को अच्छी रीति से जानते हैं। ये ही कारण है कि बाबा ने साफ साफ कहा है कि ध्यानाभ्यास के समय तुम्हारी आँखें खुली रहनी चाहिए। बंद आँखों में तो नींद समायी रहती है- बाबा नहीं। अब कुछ बंद आँखों से ध्यानाभ्यास करने वाले तर्क करेंगे, कि नहीं - हम पूरी तरह से जागरुक होते हैं और नींद का प्रभाव नहीं रहता है।

ध्यानाभ्यास करने वाले सभी साधकों से अनुरोध है कि वे पूरी ताकत से आँखें खुली रखने का अभ्यास बना लें। तभी उनका समय भी सफल होगा और परमात्मा से अमृतवेले की सारी प्राप्ति भी हो सकेगी और वे स्वयं को आनंद से भरपूर कर पायेंगे।

अमृतवेला विधि

अमृतवेले उठकर फ्रेश होकर अलग स्थान पर बैठकर पहले अपने को देखें, फिर अपने को भृकुटी में देखें। मन बुद्धि को केन्द्रित करें। अब देखो शिव बाबा सितारा पंच महातत्व के मध्य चमक रहे हैं। वहां अपना ध्यान लगाओ। बुद्धि रूपी पात्र खोल दो। मन की तार उनसे जोड़ दो। अब उनसे करंट लो। उनकी शक्तियों को अपने अंदर एब्ज़ॉर्ब करो व उनके गुणों को रिसीव करो।

सेवा

इस समय परमपिता परमात्मा आपके साथ हैं, वो आपको शक्तियां दे रहे हैं और आप जिसका भी कल्याण करना चाहते हो, उस आत्मा को सामने लाओ और उसपर सुख शांति की वर्षा करो। उसे स्वास्थ्य प्रदान करो और आशीर्वाद भी कर सकते हो।

किसी को समझाना हो, ज्ञान में लाना हो, उस समय अपने संकल्प उन्हें भेजो, वो आत्मा इन वायब्रेशन्स को कैच करेगी, क्योंकि सोते हुए आत्मा अशरीरी होती है। फिर ग्लोब को सामने रख शीतलता की, और अपने सहारे की किरणें फैलाओ तो अवश्य उन्हें पहुंचेंगी। इससे हमारा पुण्य जमा होगा। ये भविष्य की कमाई का समय है।

हिसाब किताब

अगर आपका किसी आत्मा के साथ कड़ा हिसाब किताब है, तो परमात्मा दलाल बन कर आपका हिसाब किताब उस आत्मा के साथ पूरा करा देंगे। शिवबाबा आपके सामने हैं। आप अपने सामने उस आत्मा को लाओ। उनसे सकारात्मक किरणें लो और उस आत्मा पर डालो। उसे अवश्य शांति भी मिलेगी, शीतलता भी मिलेगी और वो आत्मा बात को समझेगी भी। आप उसे सामने रख मन ही मन उससे बात करो। इससे आप हल्के होंगे।

विघ्न

निद्रा अमृतवेले सबसे बड़ा विघ्न है। निद्रा हमें जगने नहीं देती। अविनाशी कमाई करने नहीं देती। जिससे न हम अपनी इच्छापूर्ति कर पाते हैं, न सफलता मिलती है, न हिसाब किताब पूरे हो पाते हैं, न हमारे में कोई बदलाव आता है और न हम शक्तिशाली बन पाते हैं। अमृतवेला हर ब्राह्मण आत्मा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें हमारा ही फायदा है।

परमात्मा का लाड-प्यार पाने की ये उत्तम बेला है। इसलिए निद्राजीत बनना है, क्योंकि बाप का स्नेह अब थोड़े समय के लिए ही रहा है। इसके बाद ये कल्प के बाद ही मिलेगा। अगर अभी नहीं लिया तो कल्प कल्प के लिए इसे हम खो देंगे।

अभी हम परमात्मा के कितने भाग्यशाली बच्चे हैं जो वे स्वयं हम तक पहुंच कर हमें मिलने आते हैं और अपने हाथों जो चाहो वो देते हैं। इसलिए हे आत्माओं, जागो, समझो, निद्रा त्यागो और परमात्म प्राप्तियों से अपने आप को मालामाल कर लो। अभी नहीं तो कभी नहीं।

लंडन। ब्रह्माकुमारीज़ के ग्लोबल कोऑपरेशन हाउस में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान मंच पर प्रतिभागी कलाकारों के साथ युरोप सेवाकेन्द्रों की निदेशिका ब्र.कु. सुदेश दीदी। सभा में शहरवासी कार्यक्रम का आनंद उठाते हुए।

शांतिवन। ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय का अवलोकन करने के पश्चात् समूह चित्र में हरियाणा सरकार से आये हुए विधायकगण, ब्र.कु. अमीरचंद, ब्र.कु. नारायण, ब्र.कु. दीपक तथा अन्य।

शाहकोट-पंजाब। विधायक सरदार हरदेव सिंह लाडी, शहर के प्रधान एवं उपस्थित सदस्यों को ईश्वरीय सेवाओं से अवगत कराने के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. तुलसी।

पुडरी-कैथल(हरियाणा)। विधायक दिनेश कौशिक को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. पुष्पा तथा ब्र.कु. उर्मिल।

अलीगढ़-उ.प्र.। सत्यधाम में आयोजित कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए मेयर मोहम्मद फुरकान जी। मंचासीन हैं ब्र.कु. रमेश,मा.आबू, ब्र.कु. कमलेश, सत्यप्रकाश भाई तथा अन्य।

बड़हलगंज-उ.प्र.। उप जिलाधिकारी अरुण कुमार सिंह को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. राधिका।

कठुआ-जम्मू। जन्माष्टमी कार्यक्रम में एस.एस. पी.,आई.पी.एस. धार पटियाल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. वीणा तथा ब्र.कु. मधु।

दिल्ली-पांडव भवन(करोल बाग)। तीस हजारी कोर्ट, दिल्ली बार एसोसिएशन में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'ईज़ी मेडिटेशन फॉर बिज़ी लॉयर्स' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए जिला न्यायाधीश संजय कुमार, बार एसोसिएशन के प्रधान एन. सी. गुप्ता, ब्र.कु. पुष्पा तथा अन्य सीनियर एडवोकेट्स।

पदमपुर-ओडिशा। विधानसभा विधायक प्रदीप पुरोहित को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुजाता।

लखनऊ-कानपुर रोड। लेफ्टिनेंट जनरल जे.के. शर्मा,सी.ओ.एस.,सेंट्रल कमांड तथा उनकी धर्मपत्नी को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् चित्र में उनके साथ ब्र.कु. दिव्या, ब्र.कु. माधुरी व अन्य।

बाली-इंडोनेशिया। हिमालय गीता पाठशाला,डेनपसर में डॉक्टर्स के लिए आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में डॉक्टर्स के साथ ब्र.कु. जानकी तथा अन्य।

दसुआ-पंजाब। रक्षाबंधन के अवसर पर डी.एस.पी. अशरू कुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मधु।

दिल्ली-बवाना। असिस्टेंट कमिश्नर ऑफ पुलिस को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. चन्द्रिका।

अपनी शक्तियों को एक दिशा दें

- गतांक से आगे...

जीवन में हम भी अगर परिवार में एक होकर रहते हैं तो पारिवारिक समस्याओं को कई तरह से सुलझा सकते हैं। हमें जीवन जीने के लिए भी आसानी हो जाती है। इकट्ठे होते हैं तो उस बंडल को तोड़ने की क्षमता किसी की भी नहीं होती है। इस तरह से जब ये बात उन बच्चों को समझ में आ गयी, तब से उन्होंने निश्चय कर लिया कि आज के बाद हम कभी भी जीवन में लड़ेंगे नहीं। एक-दूसरे से अलग नहीं होंगे। एक होकर के हम चलेंगे। तो ये जीवन जीने की कला है कि जब हम अपने मन, वचन, कर्म को एक कर देंगे, तो जीवन में जो शक्ति आयेगी, उस शक्ति के आधार से कोई हमें तोड़ नहीं सकता है। हम जीवन में कभी दिलशिकस्त नहीं होंगे। हम जीवन में कभी भी उदासी में आकर नहीं टूटेंगे। हर रीति से हम अपने आपको सशक्त बनाकर के चलते चलेंगे। जीवन जीना आसान हो जायेगा। अगर ये तीनों शक्तियाँ अलग-अलग दिशा में चली गईं तो इन शक्तियों को तोड़ना, इन शक्तियों को भ्रमित करना आसान है। कोई भी हमारे मन को भ्रमित कर देगा। कोई हमारी वाणी को भ्रमित कर देगा और कोई हमारे कर्म को भ्रमित कर देगा। इस प्रकार जीवन में दिलशिकस्तपना, जीवन से हारने का अनुभव होगा और हम टूटने लगेंगे। ये जीवन को तोड़ने की विधि है। यही आज संसार में हो गया है कि मनुष्य किस प्रकार छोटे-छोटे बच्चों को भी भ्रमित करते हैं। जवानों को भ्रमित करते हैं। पथ से हटा देते हैं। इसलिए गीता में हमें भगवान ने यही सीख दी ''ओम तत्सत्'' यानि मन, वचन, कर्म को एक करते हुए समस्त तत्व के अंदर सत्य भाव, श्रेष्ठ भाव और दृढ़ता को ले आयें तो जीवन में कोई उसको तोड़ नहीं सकता। इस तरह ये हमारा जीवन है और जीवन जीने की कला है। अब हम थोड़ी देर के लिए मेडिटेशन करेंगे और अपने मन को परमात्मा में एकाग्र करेंगे। जिस प्रकार मेडिटेशन की विधि हमने गीता के पाँचवे और छठे अध्याय में आरंभ की। जहाँ परमात्मा ने हमें बताया कि किस प्रकार अपने मन को स्थित करना है। आत्म-भाव या आत्म-स्थिति में जब मन को स्थित कर लेते हैं तो परमात्मा की याद सहज स्वाभाविक आती है। सामने वो दिव्य स्वरूप है, परमात्मा परम प्रकाश, तेजोमय परंतु जैसे कहा चंद्रमा के समान शीतल प्रकाश से सम्पन्न है। जो असीम प्यार की वर्षा करते हैं। हम अपने मन के अंदर अंतर्चक्षु से उस दिव्य स्वरूप को निहारते जायें और उसका अनुभव करते जायें। - क्रमशः

-ब्र.कु.ऊषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

माउण्ट आबू। गरीबों को कम कीमत पर अच्छी दवाई मुहैया कराने हेतु ग्लोबल अस्पताल में 'प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि परियोजना केन्द्र' का रिबन काटकर उद्घाटन करते हुए एस.डी.ओ. एवं एस.डी.एम. निशांत जैन,आई.ए.एस.। साथ हैं ग्लोबल अस्पताल निदेशक डॉ. प्रताप मिड्ढा तथा अन्य।

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय
ओमशान्ति मीडिया,
संपादक - ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़,
शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.) 307510
सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,
Email-omshantimedia@bkivv.org

ये जीवन है...

जीवन अपने आप में, न तो सुख है , न दुःख,
आप कैसे देखते हैं,
सब इस बात पर निर्भर है।
सुख और दुःख कोई तथ्य नहीं है,
आपके देखने का ढंग है।
वही बात आपको सुख दे सकती है,
दूसरे के लिए दुःखदायी हो सकती है और
उसी बात में कोई निरपेक्ष भी रह सकता है।
ऐसा भी हो सकता है कि जो बात आज आपके लिए
सुखमय है, कल दुःख का कारण हो जाए,
इसलिए सुख-दुःख से ऊपर उठकर तटस्थ हो जाएं,
और दोनों में आनंद लें।

ख्यालों के आईने में...

निमित्त भाव?

आप सिर्फ निमित्त मात्र हैं इस संसार में। यह संसार एक रंगमंच है। सभी मनुष्य आत्मायें अपना-अपना पार्ट प्ले कर रही हैं। जो आत्मा अपना पार्ट निमित्त भाव से प्ले कर रही है, वो आनंद में है।

याद रखें :- जीवन में सच्चा आनंद और शांति तो सिर्फ व सिर्फ ईश्वरीय ध्यान, परमात्म याद में ही है। चाहे अरबों-खरबों इकट्ठा कर लो, फिर भी सच्चा आनंद और शांति कभी न मिलेगी।

हारना तब आवश्यक हो जाता है,
जब लड़ाई ''अपनों'' से हो।
और जीतना तब आवश्यक हो जाता है,
जब लड़ाई ''अपने आप'' से हो।

मॉस्को-रशिया। ब्रह्माकुमारीज़ के मायक मीरा,लाइट हाउस ऑफ द वर्ल्ड रिट्रीट सेंटर द्वारा 'ग्लोबल सिनारियो एंड द फ्यूचर ऑफ ह्युमैनिटी' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं ब्र.कु. सुधा, ब्र.कु. चक्रधारी, ब्र.कु. बृजमोहन, ब्र.कु. सुदेश तथा ब्र.कु. जयन्ती। सभा में शहर के गणमान्य लोग।

पुखरायाँ-उ.प्र.। विधायक विनोद कटियार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. ममता।

कथा सरिता

ईश्वर से संपर्क कैसे हो...

एक व्यक्ति को जानकारी हुई कि गंगा किनारे के एक संत के पास एक पारसमणि है, सो उसे पाने की लालसा में वह संत के पास गया और अपनी इच्छा कही। संत ने कहा कि अच्छा है जो तुम ले जाओगे वैसे भी यह हमारे किसी काम की नहीं। व्यक्ति प्रसन्न हो उठा। संत ने कहा कि जाओ, कुटिया के छप्पर पर एक लोहे की संदूकची है, उसे ले आओ। व्यक्ति को कुछ आश्चर्य हुआ परन्तु छप्पर पर चढ़कर वह छोटी सी संदूकची उठा लाया। क्या इसमें पारसमणि है? क्या यह पारसमणि असली है? यदि असली है तो संदूकची सोने की क्यों न हुई? जब न रहा गया तो संत से पूछ ही लिया कि संदूकची में पारसमणि होने पर भी यह सोने की क्यों न हुई? संत ने उसके सामने ही संदूकची को खोला। पारसमणि एक गुदड़ी में लिपटी हुई रखी थी। आवरण में होने के कारण ही लोहे की संदूकची सोने की न हुई। एक साथ होने पर भी एक दूसरे का स्पर्श न हो सका और स्पर्श न होने के कारण दोनों का स्वरूप भी अलग-अलग ही बना रहा।

ठीक इसी प्रकार ईश्वर और जीव दोनों ही हृदय में एक ही साथ रहते हैं परन्तु दोनों के बीच वासना का पर्दा होने के कारण दोनों का मिलन नहीं हो पाता। जीवात्मा लोहे की संदूकची है और ईश्वर पारसमणि। जब तक जीव का अहम और ममता रूपी चिथड़ा न हटे तब तक ईश्वर से संपर्क कैसे हो। परमात्मा से प्रेम करना है, मिलना है, तो विषयों का प्रेम छोड़ना ही होगा। जो अत्यधिक निकट है, उसे न देख कहाँ खोज रहे हो? जहाँ हो, वहीं बैठ जाओ। भटकाव का समय नहीं है। बहुत समय व्यर्थ ही व्यतीत हो गया। न जाने अब कितनी श्वासें शेष हैं? अगला ही क्षण कहीं अंतिम न हो! प्रियतम तो प्रेम भरी दृष्टि से निहार ही रहे हैं कि कब यह मेरी ओर देखे। और हम संसार के दृश्यों में आनन्द लेते हुए प्रियतम को खोज रहे हैं! वो जहाँ हैं वहाँ न खोजा। वे भी इतने निकट छुपते हैं, जहाँ हमें संदेह भी नहीं होता और इसी कारण मिलन में देरी हो जाती है। प्राण और प्रियतम! प्रियतम हैं तो प्राण है और जब तक प्राण है, वह प्रियतम मेरे पास ही हैं!!

केवल एक दिन का पुण्य क्यों?

एकादशी से अगले दिन एक भिखारी एक सज्जन की दुकान पर भीख मांगने पहुंचा। सज्जन व्यक्ति ने एक रुपये का सिक्का निकालकर उसे दे दिया। भिखारी को प्यास भी लगी थी, वो बोला बाबूजी एक गिलास पानी भी पिलवा दो, गला सूखा जा रहा है। सज्जन व्यक्ति गुस्से में, तुम्हारे बाप के नौकर बैठे हैं क्या हम यहाँ, पहले पैसे, अब पानी, थोड़ी देर में रोटी मांगेगा, चल भाग यहाँ से।

भिखारी बोला : बाबूजी गुस्सा मत कीजिए। मैं आगे कहीं पानी पी लूंगा, पर जहाँ तक मुझे याद है, कल इसी दुकान के बाहर मीठे पानी की छबील लगी थी और आप स्वयं लोगों को रोक-रोक कर ज़बरदस्ती अपने हाथों से गिलास पकड़ा रहे थे, मुझे भी कल आपके हाथों से दो गिलास शर्बत पीने को मिला था, मैंने तो यही सोचा था आप बड़े धर्मात्मा आदमी हैं, पर आज मेरा भ्रम टूट गया। कल की छबील तो शायद आपने लोगों को दिखाने के लिए लगाई थी। मुझे आज आपने कड़वे वचन बोलकर अपना कल का सारा पुण्य खो दिया। मुझे माफ करना अगर मैं कुछ ज़्यादा बोल गया हूँ तो....।

सज्जन को बात दिल पर लगी, उसकी नज़रों के सामने बीते दिन का प्रत्येक दृश्य घूम गया। उसे अपनी गलती का अहसास हो रहा था। वह स्वयं अपनी गद्दी से उठा और अपने हाथों से गिलास में पानी भरकर उस भिखारी को देते हुए उससे क्षमा प्रार्थना करने लगा।

भिखारी : बाबू जी मुझे आपसे कोई शिकायत नहीं, परन्तु अगर मानवता को अपने मन की गहराइयों में नहीं बसा सकते, तो एक दो दिन किये हुए पुण्य व्यर्थ हैं। मानवता का मतलब तो हमेशा शालीनता से मानव व जीव की सेवा करना है। आपको अपनी गलती का अहसास हुआ है। ये आपके व आपकी सन्तानों के लिए अच्छी बात है। आप व आपका परिवार हमेशा स्वस्थ व दीर्घायु बना रहे, ऐसी मैं कामना करता हूँ, यह कहते हुए भिखारी आगे बढ़ गया।

सेठ ने तुरंत अपने बेटे को आदेश देते हुए कहा : कल से दो घड़े पानी दुकान के आगे आने-जाने वालों के लिए ज़रूर रखे हों। उसे अपनी गलती सुधारने पर बड़ी खुशी हो रही थी।

मनाली-हि.प्र.। जी.आर.ई.एफ.एफ.(38बी.आर.टी.एफ.) के लेफ्टिनेंट कर्नल सेकेण्ड कमांडिंग इंचार्ज जयपाल सिंह व अन्य अधिकारियों को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. संध्या, ब्र.कु. ऋताम्भरा तथा अन्य।

जयपुर-कमला अपार्टमेंट। एच.पी.सी.एल. के ऑफिसर्स को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. स्वाती, एच.पी.सी.एल. के ट्रेनिंग मैनेजर अमरनाथ सिखपुड़ा तथा स्टाफ।

सम्बलपुर-ओडिशा। सेवाकेन्द्र पर आयोजित जन्माष्टमी कार्यक्रम में नवीन पटनायक,ब्रान्च मैनेजर,स्टेट बैंक ऑफ इंडिया,बनहारपली ब्रान्च को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. बिन्दु।

नेपाल-विराटनगर। आंतरिक मामला तथा कानून मंत्री हिक्मत कार्की को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रेनू। साथ हैं ब्र.कु. तुलसी।

दिल्ली-मजलिस-पार्क। सांसद उदित राज को राखी बांधने से पूर्व आत्म स्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु. राजकुमारी।

निम्बाहेड़ा-चितौड़गढ़। यू.डी.एच. मिनिस्टर श्रीचंद कृपलानी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शिवाली।

कानपुर-किदवई नगर(उ.प्र.)। विधायक महेश त्रिवेदी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. आरती।

दिल्ली-इन्दरपुरी। राजेन्द्र नगर विधानसभा क्षेत्र के विधायक को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. बाला। साथ हैं ब्र.कु. अभिनव।

छता-कोसीकलाँ(उ.प्र.)। नगर पालिका अध्यक्ष चन्द्र प्रकाश जी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. ज्योत्सना।

सुजानगढ़-राज.। विधायक खेमाराम मेघवाल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुप्रभा।

झिंझक-उ.प्र.। सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के मैनेजर एस. शुक्ला को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रीना।

चरखी दादरी-हरियाणा। द्रोणाचार्य अवॉर्ड से सम्मानित महावीर फोगाट को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. प्रेमलता।

फरीदाबाद-हरियाणा। सर्वोदया हॉस्पिटल के डायरेक्टर डॉ. राकेश गुप्ता को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. निरूपम।

क्षमा करो, भूल जाओ

- ब्र.कु. अनुज,दिल्ली

हमने अपने छोटे से जीवन के अनुभव में देखा कि कुछ नहीं, सब कुछ एक बात पर निर्भर करता है कि आपका खुद से कितना प्यार है, उसी के आधार से जीवन का संसार है। कई बार लगता होगा, कि नहीं भाई, दूसरों को सम्मान और प्यार देना, उन्हें समाना, बड़ा ही मुश्किल कार्य है। लेकिन सबसे ज़्यादा मुश्किल कार्य है अपने को समझाना व समाना। आपका वजूद आपके जीवन के सिद्धान्तों से मिलकर बनता है, ना कि दूसरों के सहारे। तभी तो इतनी सारी कन्डीशन है इस दुनिया में। हमें इतनी परवाह है दूसरों की, इस वजह से नहीं कि हमें उनका ध्यान रखना है, उन्हें आगे बढ़ाना है, बल्कि इसलिए है कि हमारे साथ जो हैं, उन्हें हमें समझना चाहिए, हमारी भावनाओं को महसूस करना चाहिए, ताकि हमारा अहम् उससे तुष्ट हो जाए।

तभी शायद हम दूसरों को माफ नहीं कर पाते, क्षमा नहीं कर पाते। आप सच सच बताओ, आपसे जब जीवन में कोई भी भूल होती है, या हुई है, जो गलती हुई, उससे आपने अपने आप को निकाला है, या बीच-बीच में वो बातें आपको तंग करती हैं? अगर तंग करती हैं, तो आपने अपने को ही कहाँ माफ किया है! जो कुछ आपसे भूल हुई, उसे भूलने की ताकत अभी नहीं आई है। आप सोचो, जो कुछ हुआ, जिस मिनट हुआ है, वो फिर कल्प बाद दुबारा होगा। इतने दिन तक पकड़ कर रखने के बाद हमारी स्थिति दिन प्रतिदिन खराब होती ही गई है। इसलिए हमारे और हमारी भूलों या गलतियों के बीच में कोई है, जो हमें ठीक कर सकता है, तो वो है हमारी समझ। इतनी ऊँची भगवान की समझ मिली कि जो पास्ट हुआ, उसे भूलो। तो फिर उसे याद कर उस पर तेज़ाब डालना ज़रूरी है!

आपको पता है कि आप यात्री हैं और आप एक लम्बी यात्रा पर जा रहे हैं! इस यात्रा पर अनेकानेक सहयात्री भी होंगे, जिनका सबकुछ आपसे अलग होगा, उन्हें आपको साथ भी रखना होगा, सहना होगा, समाना भी होगा, लेकिन धैर्यवत होकर।

किसी के जीवन में कोई भी हादसा होता है, उसने ही उसको बदला है। क्योंकि उसमें कल्याण था कि नहीं, इससे मुझे यह सीख मिली, ताकि मैं कुछ कर सकूँ। दूसरा कोई गलती करता है, सोचते हम हैं, दूसरा गड़बड़ करता, सोचते हम हैं। सोचना अच्छी बात है, लेकिन यह सोचो कि यह ठीक कैसे हो, ना कि जब देखो, ये सभी ऐसे ही करते जाते हैं। मैं इसके लिए उन्हें कभी माफ नहीं करूंगा। इससे अब आप देखो, नुकसान किसका है? जिन्होंने गलती की होगी, पता नहीं उनको इसकी परवाह है या नहीं, हमें नहीं पता। लेकिन आप अपना मन खराब करके, अपने को नीचे की तरफ ले जा रहे हैं। इसमें सबसे अच्छा भगवान का उदाहरण ले लेते हैं, वो इतनी करोड़ों आत्माओं को देखता ही नहीं, क्योंकि हर कोई, हर सेकेण्ड गलती करते ही जा रहा है, और वो है कि न्यारा, उसे कोई परवाह नहीं। तो आपको क्या परवाह! आप समझा दो, लेकिन वो करेगा ही, इस तरह से नहीं। आप सिर्फ अपने हर कर्म के ज़िम्मेवार हो। आप कर्म कर रहे हैं परेशान होने का, तो आत्मा भी तो दुःखी हो रही है ना! तो बस, भगवान की तरह सभी की माँ बन जाओ या सभी के पिता बन जाओ तो माफ करना आसान हो जायेगा। क्योंकि वह अपने बच्चों की गलती समा लेते हैं, उसे सदा वैसा ही प्यार देते हैं।

हम माफ तभी नहीं कर पाते जब किसी को समान समझते हैं। समान समझने से ही गलती नज़र आती है। इसलिए पूर्वजपन की स्मृति आगे बढ़ा देगी।

नई दिल्ली-राजौरी गार्डन। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मनोज तिवारी को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. शक्ति तथा अन्य।

अमरोहा-उ.प्र.। जिलाधिकारी हेमंत कुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. योगिता।

पॉज़ीटिव दर्शन के माध्यम से परदर्शन से मुक्ति

प्रश्न : बाबा की वर्तमान प्रेरणायें क्या हैं? और खासकर अभी बाबा ने मुरली चलाई कि आप अपने आप को पूरी तरह एकाग्र करो। आधे घंटे भी कर लो, एक घंटे भी कर लो तो ये तो एक बड़ी सी बात हो गई है साधना के लिए। एक मिनट या आधे मिनट के लिए भी हम अपने आपको एकाग्र नहीं कर पाते हैं और यदि ऐसी लम्बी एकाग्रता हमें प्राप्त करनी हो तो कैसे करें? और बाबा की वर्तमान प्रेरणाओं पर भी प्रकाश डालें।

उत्तर : निश्चित रूप से बहुत बड़ी बात ये आई है। ये बातें ईश्वरीय महावाक्यों में पहले भी बहुत बार सुनी हुई हैं। अपने मन बुद्धि को किसी भी स्वरूप पर लम्बा समय स्थिर कर सको। जब चाहो, मान लो जब परिस्थिति है तब रात को, दिन में, सवेरे, दोपहर, शाम जो भी समय हो, 10 मिनट चाहो, 10 मिनट अपनी बुद्धि को स्थिर कर सको। जो ऐसे लम्बे काल के अभ्यासी होंगे, वही लम्बे काल के अधिकारी बनेंगे। तो इसपर बाबा ने बहुत फोकस किया। इससे साइलेंस पॉवर इकट्ठी होगी। इससे चमत्कारिक शक्ति आत्मा में आ जायेगी जिससे वो विश्व कल्याण के कार्य में बहुत बड़ी भूमिका निभा सकेंगे। तो बाबा की जो प्रेरणायें हैं वो यही हैं कि ये समय अभी समाप्ति की ओर जा रहा है। अब ये विश्व परिवर्तन का कार्य कुछ भयानक रूप लेने जा रहा है, मैं ये शब्द यूज़ करूंगा। मैं केवल ये नहीं कहूंगा कि परिवर्तन होगा, छोटा मोटा एक भयानक रूप होगा इसका। क्योंकि जो कुछ नहीं है वो आयेगा और जो है वो नहीं रहेगा। सब परिवर्तन हो जायेगा। हर तरह से, चाहे वो इकोनॉमिकली हो, सोशली हो, रिलीजियसली हो, स्पीरिचुअलिटी के आधार पर हो, या प्यूरिटी वाइज़ हो, या मनुष्य की मोरल वैल्यूज़ के अनुसार हो, और सांसारिक धरा पर भी, आकाश में, ग्रहों में, बहुत बड़ा परिवर्तन होने जा रहा है। तो इसके लिए शिवबाबा ये चाहते हैं कि मेरे बच्चे तैयार हो जायें, ऐसा नहीं कि जब संसार कष्टों से गुज़रे तो मेरे बच्चे भी कष्टों में हों। संसार में भय व्याप्त हो तो मेरे बच्चे भी भयभीत होकर घर में छुपे हुए हों। हमें सबके भय निकालने हैं। हमें सबको रास्ता दिखाना है। सबको वायब्रेशन्स देकर मदद करनी है। इसकी तैयारी चाहते हैं बाबा, इसलिए बहुत अच्छी अच्छी बातें आ रही हैं। मन को डांस कराओ, मन को शांत करो, मन को पॉवरफुल बना दो, ये बहुत ज़रूरी है। ये जो एकाग्रता वाली बात है, ये तो बहुत बड़ा टॉपिक है। इस पर हम पहले भी चर्चा करते आये हैं। ये

मन की बात
- राजयोगी

वही है जिसे श्रीमद्भगवद् गीता के दूसरे अध्याय में स्थितप्रज्ञ योगी कहा गया है। जिसकी बुद्धि स्थिर है ऐसा योगी। देखिये, पहली चीज़ है, जो आत्मिक स्वरूप का बहुत अभ्यास करते हैं, जो दूसरों को आत्मा देखने की प्रैक्टिस करते हैं, उनके लिए ये एकाग्रता सहज हो जाती है। जो आत्मा स्वमान में बहुत अच्छी तरह स्थित रहती है उनके लिए भी ये साधनायें बहुत अच्छी हो जाती हैं। मैं कोई धारणाओं की बातें कर लूँ, इसके लिए मनुष्य को अन्तर्मुखी होना चाहिए। बहुत संतुष्ट, मैं पन से मुक्त, बहुत सरलचित्त, ताकि उसका मन भटके नहीं। जैसे शिव बाबा ने इस विश्व को एक ड्रामा कहकर आदि, मध्य, अन्त का ज्ञान दिया है। उसका प्रयोग करना ताकि उसका चित्त शांत रहे, दूसरों के लिए साक्षी भाव आ जाये। ये कुछ धारणायें हैं जो मनुष्य को व्यर्थ से मुक्त रखती हैं। अगर मनुष्य इन धारणाओं को जीवन में नहीं लाता और अपने मन पर कंट्रोल कर ले ज़बरदस्ती, वो होगा नहीं, वो टेंशन दे देगा और। दिमाग पर उसका नेगेटिव इफेक्ट होगा, इसलिए अच्छाइयों के द्वारा बुराइयों पर विजय। पॉज़ीटिव चिंतन के द्वारा, एलिवेटिव चिंतन के द्वारा व्यर्थ को खत्म करने का एक तरीका है। 5-7 चीज़ों पर हमें इसकी प्रैक्टिस करनी है। इन्होंने कहा 10 मिनट, आधा घंटा तो बहुत ज़्यादा है। मैं कहूंगा कि एक मिनट से शुरू करें। एक मिनट आत्मिक स्वरूप पर स्थिर होते हुए मन चिंतन करेगा और बुद्धि विज़ुअलाइज़ करेगी, दर्शन करेगी, तो आत्मा का दर्शन करते हुए मन से चिन्तन कर लें। एक मिनट और कोशिश करें कि चिन्तन आत्मा के बाहर ना जाये। दूसरा चिन्तन परमात्मा का कर लें, उसके स्वरूप को निहारते हुए उसके गुणों का चिन्तन कर लें। बाकी चिन्तन पाँच स्वरूपों का कर लें। इसमें आत्मा का एक स्वरूप आ गया। 6 हो गये। और सातवीं स्थिति बना लें सूक्ष्म लोक में बापदादा से मिलना, उनसे वरदान लेना, उनसे बातें करना, उनका शुक्रिया करना, ये सात चीज़ें हो गईं। एक एक मिनट से शुरू करें, फिर दो मिनट तक ले जाएं, फिर तीन मिनट ले जाओ, ये बहुत इज़ी हो जायेगा। पाँच मिनट तक आप ले गये तो 5-5 मिनट तक आपकी एकाग्रता बहुत सुन्दर हो जायेगी। और जब एक बार एकाग्रता होने लगेगी तो इसका रस, इसका परमानंद चित्त को लम्बे समय तक शांत और एकाग्र करेगा। बस मैं इतना थोड़ा सा कहूंगा कि 10-15 मिनट सवेरे, 10-15 मिनट शाम को, बिल्कुल एकान्त में, इन चीज़ों का अभ्यास कर लें रोज़, तो कुछ ही दिनों में, मैं नहीं समझता सात दिनों से ज़्यादा लगेगें। किसी को पहले ही दिन से होगा एक सुखद फीलिंग और एकाग्रता बहुत बढ़ती जायेगी और फिर अगर हम चाहेंगे जो बाबा ने कहा आधा घंटा, सवा घंटा, वो हम कर पायेंगे।

Contact e-mail -
bksurya8@yahoo.com

नोएडा-उ.प्र.। नोएडा अथॉरिटी ए.सी.ओ. राम मिश्रा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रेनू। साथ हैं ब्र.कु. दीपक व अन्य।

मऊ-उ.प्र.। डी.एम. प्रकाश बिन्दु,आई.ए.एस. को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. विमला।

पटना-बिहार। एन.डी.आर.एफ. के सी.ओ. विजय कुमार सिन्हा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुजाता।

वैर-राज.। तहसीलदार वासुदेव शर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. संतोष।

हरदोई-पिहानी चुंगी(उ.प्र.)। पुलिस कप्तान विपिन कुमार मिश्रा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मालती। साथ हैं ब्र.कु. लवली।

राज्याभिषेक की तैयारी

राजा का पुत्र हूँ, लायक हूँ, उसके आधार से आगे की राजगद्दी हमें मिलेगी। लेकिन उसके लिए हमारे या आपके अंदर बहुत सारे राजाई गुण होने ही चाहिए। अगर हैं, तो कामयाब तरीके से हम राजाई चला सकते हैं। लेकिन उसकी पूर्व तैयारी भी तो चाहिए...!

जब राजा रामचन्द्र जी ने रावण पर विजय प्राप्त कर अयोध्या की ओर प्रस्थान किया था, उस समय उनके आगमन की खुशी में पूरे नगर को रोशनी से भर दिया गया था, अर्थात् हर जगह दीपक शोभायमान थे, हर कोई इस बात को लेकर आतुर था कि यह उत्सव का दिन है, जिसमें विजय मिली है। लेकिन विजय किसकी, किस पर? यह कोई जातक कथा या किवदन्ती या फिर बनी बनायी कहानी भर हो सकती है!

रामकथा में यह वर्णन भी आता है कि सभी नगरवासी एक-एक को बधाई देते भी नज़र आते, कहते कि खुशियों के दीप जलाओ कि राजा राम विजय पताका फहरा अब अयोध्या नगरी तरफ बढ़ रहे हैं।

कुछ भी हो, लेकिन इसका कुछ तो भावार्थ होगा ही! क्योंकि तुलसीदास जी ने कोई भी बात ऐसे ही तो नहीं कह दी होगी! उन्होंने उसे मानसिक रूप से तैयार भी किया, उससे हर मानव को शिक्षा भी दी। आत्मा राम जब अपने विकारों के वश हुई, अर्थात् रावण के वश हुई, तो उसने अपनी सारी शक्ति खो दी। शक्ति प्राप्त करने हेतु उसे पुनः शिव परमात्मा के साथ जुड़ना पड़ा। उससे शक्ति प्राप्त कर रावण का विनाश किया, ऐसा दिखाया जाता है। सोचो आप, आत्मा कितनी न कमज़ोर होगी, कि उसे माया को हराना इतना आसान नहीं रहा!

यहां पर बात चल रही है, कई बार हम जीत भी जाते, लेकिन फिर माया या रावण खुल के सामने आ जाता। इसी का यादगार वहां दिखाया जाता है, कि जब राम तीर चलाते, रावण का सिर कट जाता और पुनः आ जाता। फिर राम को याद दिलाने के लिए किसी विभीषण की ज़रूरत पड़ी।

विभीषण को सभी नकारात्मक भूमिका में ही देखते आए कि उसने घर का भेद किसी और को बता दिया। लेकिन आप सोचिए, जो व्यक्ति अधर्मी हो, उसका साथ देना कहाँ का न्याय है! इसलिए वहाँ पर चरित्र रूप से उन्होंने विश्व कल्याण, लोक कल्याण, जन कल्याण हेतु भगवान की शरण ली तथा उसमें सहयोग दिया। तो हमें भी रावण या माया पर जीत दिलाने के लिए विभीषण की भूमिका निभानी पड़ेगी। तभी तो रावण जड़ से नष्ट होगा, अन्यथा तो वो कभी मरने वाला नहीं। अगर हमें निरन्तर जागना हो, तो जगाना भी होगा, यही जागना अर्थात् जो जागा हुआ है, वही तो रावण को मार, अपनी ज्योति जगायेगा अथवा अपने को जागति ज्योत बनायेगा।

आज हर किसी को इसी जागति ज्योत की तरह बनना पड़ेगा। तभी तो दिवाली घर घर में होगी। लेकिन उसके बाद जो राज्याभिषेक होगा, वह भी देखने वाला होगा। राजा रामचन्द्र जी भी एक उदाहरण के रूप में ही तो हैं, जिनका राज्याभिषेक भी हुआ, लेकिन रावण को जीतने के बाद। इसी को राजतिलक या भैया दूज कहा जाता है। यह कथा मानसिक आधार से तैयार की गई है। आप सोचिए, अगर आप भी इसी की तैयारी में लग जाएं, तो राज्याभिषेक होगा ही होगा। वो भी बड़े धूमधाम से।

आपका जीवन किस पत्ते की तरह

एक समय की बात है गंगा नदी के किनारे पीपल का एक पेड़ था। पहाड़ों से उतरती गंगा पूरे वेग से बह रही थी कि अचानक पेड़ से दो पत्ते नदी में आ गिरे। एक पत्ता आड़ा गिरा और एक पत्ता सीधा। जो आड़ा गिरा वो अड़ गया, कहने लगा, आज चाहे जो हो जाए मैं इस नदी को रोक कर ही रहूंगा। चाहे मेरी जान ही क्यों न चली जाए मैं इसे आगे नहीं बढ़ने दूंगा।

वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा - रुक जा गंगा, अब तू और आगे नहीं बढ़ सकती, मैं तुझे यहीं रोक दूंगा! पर नदी तो बढ़ती ही जा रही थी, उसे तो पता भी नहीं था कि कोई पत्ता उसे रोकने की कोशिश कर रहा है, पर पत्ते की तो जान पर बन आई थी। वो लगातार संघर्ष कर रहा था, नहीं जानता था कि बिना लड़े भी वहीं पहुंचेगा जहाँ लड़कर, थककर, हारकर पहुंचेगा! पर अब और तब के बीच का समय उसकी पीड़ा का, उसके संताप का काल बन जाएगा।

वहीं दूसरा पत्ता जो सीधा गिरा था, वह तो नदी के प्रवाह के साथ ही बड़े मज़े से बहता जा रहा था। यह कहता हुआ कि चल गंगा, आज मैं तुझे तेरे गंतव्य तक पहुँचा कर ही दम लूंगा, चाहे जो हो जाए मैं तेरे मार्ग में कोई अवरोध नहीं आने दूंगा, तुझे सागर तक पहुंचा ही दूंगा।

नदी को इस पत्ते का भी कुछ पता नहीं, वह तो अपनी ही धुन में सागर की ओर बढ़ती जा रही है, पर पत्ता तो आनंदित है, वह तो यही समझ रहा है कि वही नदी को अपने साथ बहाए ले जा रहा है। आड़े पत्ते की तरह सीधा पत्ता भी नहीं जानता था कि चाहे वो नदी का साथ दे या नहीं, नदी तो वहीं पहुंचेगी जहाँ उसे पहुंचना है! पर अब और तब के बीच का समय उसके सुख का, उसके आनंद का काल बन जाएगा।

जो पत्ता नदी से लड़ रहा है उसे रोक रहा है, उसकी जीत का कोई उपाय संभव नहीं है और जो पत्ता नदी को बहाए जा रहा है, उसकी हार का कोई उपाय संभव नहीं है। जीवन भी उस नदी के समान है जिसमें सुख और दुःख की तेज़ धारायें बहती रहती हैं और जो कोई जीवन की इस धारा को आड़े पत्ते की तरह रोकने का प्रयास करता है तो वह मूर्ख है, क्योंकि ना तो कभी जीवन किसी के लिए रुका है और ना ही रुक सकता है। वह अज्ञान में है जो आड़े पत्ते की तरह जीवन की इस बहती नदी में सुख की धारा ठहराने या दुःख की धारा को जल्दी बहाने की मूर्खतापूर्ण कोशिश करता है। क्योंकि सुख की धारा जितने दिन बहनी है उतने दिन तक ही बहेगी, आप उसे बढ़ा नहीं सकते और अगर आपके जीवन में दुःख का बहाव जितने समय तक के लिए आना है, वो आकर ही रहेगा, फिर क्यों आड़े पत्ते की तरह इसे रोकने की फिजूल मेहनत करना।

बल्कि जीवन में आने वाली हर अच्छी बुरी परिस्थितियों में खुश होकर जीवन की बहती धारा के साथ उस सीधे पत्ते की तरह ऐसे चलते जाओ जैसे जीवन आपको नहीं, बल्कि आप जीवन को चला रहे हो। सीधे पत्ते की तरह सुख और दुःख में समता और आनन्दित होकर जीवन की धारा में मौज से बहते जाएँ। और जब जीवन में ऐसी सहजता से चलना सीख गए तो फिर सुख क्या और दुःख क्या! जीवन के बहाव में ऐसे ना बहो कि थककर हार भी जाओ और अंत तक जीवन आपके लिए एक पहेली बन जाये, बल्कि जीवन के बहाव को हँस कर ऐसे बहाते जाओ कि अंत तक आप जीवन के लिए पहेली बन जायें।

दिल्ली-करोल बाग(पाण्डव भवन)। आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् सुप्रीम कोर्ट ऑफ इंडिया के जस्टिस मदन बी. लोकुर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. पुष्पा तथा ब्र.कु. सविता।

आगरा-नवपुरा(उ.प्र.)। विधायक जीतेन्द्र वर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शशि।

पठानकोट-पंजाब। एस.के. पुंज,लायन इंटरनेशनल डिस्ट्रीक्ट गवर्नर व साईं ग्रुप ऑफ इंजीनियरिंग तथा एस.डी. तृप्ता को राखी बांधते हुए ब्र.कु. सत्या।

गोण्डा-उ.प्र.। ज्ञानचर्चा के पश्चात् सी.एम.ओ. वी.पी. सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. दिव्या।

शिवाजी नगर-किशनगढ़(राज.)। सिलोरा थाने में पुलिस अधिकारी बंसी लाल तथा अन्य अधिकारियों को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् प्रसाद देते हुए ब्र.कु. शांति तथा अन्य ब्र.कु. बहनें।

सासाराम-बिहार। जिलाधिकारी पंकज दीक्षित को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. बबिता तथा ब्र.कु. नीतू।

दिल्ली-सीताराम बाज़ार। एडिशनल डी.सी.पी. अमित शर्मा को राखी बांधते हुए ब्र.कु. सुनीता। साथ हैं ब्र.कु.संगीता।

जमशेदपुर-झारखण्ड। डी.सी. अमित कुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. संजू, ब्र.कु. खुशबू तथा अन्य।

बद्री -हि.प्र.। बी.बी.एन.डी.ए. के सी.ई.ओ. के. सी.चमन को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शकुन्तला।

जयपुर-सोडाला। अभिनेत्री शशी शर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. पूनम।

नेपाल-गौर। नगरपालिका की उप मेयर किरण ठाकुर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. जमुना।

चित्तौड़गढ़-राज.। जिला जेल में अधिकारियों एवं कैदी भाइयों को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. बिनीता तथा ब्र.कु. बहनें।

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा त्रिदिवसीय मीडिया महासम्मेलन का सफल आयोजन

समाज में बदलाव के लिए साहसपूर्ण कदम उठाये मीडिया

दादी जी के साथ मंच पर ब्र.कु. करुणा, एस.सी. ठाकुर, संजय शर्मा, प्रो. कमल दीक्षित, ब्र.कु. चन्द्रकला तथा अन्य।

शांतिवन। बेहतर विश्व बनाने में मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण है। यदि मीडियाकर्मियों में ट्रस्टीपन लाया जाए तो मीडिया विश्व बदलाव का बड़ा माध्यम बन सकता है। इसके लिए लोगों को आगे आकर प्रयास करना होगा। निष्पक्ष पत्रकारिता कर पाना एक चुनौतिपूर्ण कार्य है।

उक्त उद्गार न्यूज़ इंडिया चैनल के एडिटर इन चीफ संजय शर्मा ने ब्रह्माकुमारी संस्थान द्वारा 'बेहतर विश्व के निर्माण के लिए प्रबुद्ध मीडिया' विषय पर आयोजित मीडिया महासम्मेलन के उद्घाटन सत्र में उपस्थित लगभग पन्द्रह सौ पत्रकारों को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि पत्रकारिता का काम प्रश्न उठाना है, ऐसे में मीडिया में साहस होना ज़रूरी है। एक व्यक्ति भी विश्व का परिवर्तन कर सकता है, ये बात प्रजापिता ब्रह्मा साकार कर रहे हैं।

ब्रह्माकुमारी संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने कहा कि माँ बाप बच्चों को बचपन से ही अच्छे संस्कारों की शिक्षा दें। यदि माँ बाप में भी गुण, विशेषताएं, अच्छी आदतें और श्रेष्ठ संस्कार होंगे तो बच्चों में भी वही संस्कार विकसित होंगे। अच्छी बातों का प्रचार प्रसार मीडिया करे तो समाज में अच्छाई का माहौल बन जायेगा।

मुम्बई से आए नवभारत टाइम्स के सम्पादक सुंदरचंद ठाकुर ने कहा कि मीडिया को अपनी ज़िम्मेदारी समझते हुए समाज को बेहतर बनाने की दिशा में ज़रूरी कदम उठाने होंगे। समाज के आगे आदर्श प्रस्तुत करना होगा।

जयपुर से आये दूरदर्शन के डायरेक्टर डॉ. राजकुमार नायर ने कहा कि कलम ईश्वर से जुड़ने का सशक्त माध्यम है। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा इस पावन भू धरा से समाज को बदलने का कार्य किया जा रहा है जो बहुत ही सराहनीय है। ये ऐसी संस्था है जो माताओं बहनों द्वारा संचालित है, जहां सभी को एकसूत्र में पिरोने का कार्य किया जा रहा है। वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को साकार किया जा रहा है।

मीडिया से आकांक्षाएँ

- निष्पक्ष पत्रकारिता, एक चुनौतिपूर्ण कार्य
- कलम ईश्वर से जोड़ने का सशक्त माध्यम
- मीडिया बदलाव की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी
- पत्रकार आध्यात्मिक रूप से सशक्त, मज़बूत होकर समाज में लाएं बदलाव
- बेहतर विश्व निर्माण के लिए मीडिया में जगे ट्रस्टीभाव
- समाज के आगे आदर्श प्रस्तुत करे मीडिया

केन्द्रीय विकास एवं योजना विभाग के उप निदेशक अजय कुमार राय ने कहा कि आज़ादी से लेकर अब तक जो भी बड़े या महान कार्य हुए हैं वह सभी मीडिया के कारण ही संभव हो सके हैं। नए बदलाव में मीडिया सबसे बड़ी कड़ी है।

वरिष्ठ पत्रकार प्रो. कमल दीक्षित ने कहा कि मीडिया ही बदलाव का सबसे बड़ा केन्द्रबिन्दु और माध्यम है। जब पत्रकार आध्यात्मिक रूप से सशक्त, मज़बूत और दिव्य गुणों से ओतप्रोत होगा तो समाज भी उसी अनुसार हो जायेगा क्योंकि मूल्यनिष्ठ समाज का आधार मूल्यनिष्ठ मीडिया है।

ब्रह्माकुमारी संस्था के महासचिव ब्र.कु. निर्वैर ने कहा कि दुनिया भर में अध्यात्म की ज्योति जलाने और लोगों में सकारात्मक परिवर्तन लाने का बीड़ा मीडिया को उठाना होगा। मीडिया से ही अध्यात्म का नारा बुलंद होगा।

ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष ब्र.कु. करुणा ने कहा कि मीडिया में ही वह ताकत है जो विश्व परिवर्तन का महान कार्य कर सकता है।

ब्र.कु. शीलू ने सभी को राजयोग का अभ्यास कराकर गहन शांति का अनुभव कराया। बैंगलुरु से आईं बालिकाओं ने सुंदर नृत्य की प्रस्तुति दी। जयपुर की ब्र.कु. चन्द्रकला ने कार्यक्रम का सफल संचालन किया।

किसान अभियान के द्वारा दी शाश्वत खेती की सीख

इंदौर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग द्वारा सम्पूर्ण भारत के किसानों की समृद्धि एवं कम लागत में अधिक उत्पादन हेतु शाश्वत यौगिक खेती की जानकारी देने के लिए 'किसान सशक्तिकरण अभियान' का शुभारंभ किया गया। इस अभियान के लिए छः रथों का निर्माण किया गया है जो विभिन्न प्रदेशों के बहत्तर रथ यात्रियों के साथ मालवा सहित प्रदेश के अन्य जिलों के ग्रामों में एक मास तक किसानों को आंतरिक सशक्तिकरण के साथ सार्थक परिवर्तन के कारगर उपाय बताएंगे।

दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. सरला, ब्र.कु. राजू, प्रभाग के अन्य सदस्य व आमंत्रित अतिथिगण।

उद्घाटन अवसर पर कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्षा ब्र.कु. सरला ने कहा कि देश में कई स्थानों पर किसानों व वैज्ञानिकों तथा अनुसंधानकर्ताओं की देखरेख में जो प्रयोग किए गए हैं, उनके परिणाम अभूतपूर्व हैं, जिनके आधार पर कहा जा सकता है कि यह एक बड़ी क्रान्ति का आगाज़ है।

प्रभाग के उपाध्यक्ष ब्र.कु. राजू ने संस्था के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग की गतिविधियों पर बताया कि संस्था ने व्यसनमुक्ति तथा आध्यात्मिक शक्ति से सम्पन्न सशक्त किसान के माध्यम से सम्पूर्ण गांवों को पूरी तरह से परिवर्तित करने का सपना संजोया है, जो देश में अनेक स्थानों पर सच साबित हो रहा है। उन्होंने बताया कि कोल्हापुर के कुछ किसानों ने अपने खेतों में बिना रासायनिक खाद के अपने योग के प्रकम्पनों के आधार पर जो परिणाम प्राप्त किये हैं, उन्हें अब शाश्वत यौगिक खेती के रूप में देश के कृषि विश्वविद्यालयों ने भी स्वीकार किया है।

संस्थान में नेशनल कॉन्फ्रेन्स कम मेडिटेशन रिट्रीट

साइंटिस्ट एवं इंजीनियर्स के लिए त्रिदिवसीय सम्मेलन

शांतिवन। ब्रह्माकुमारीज़ के साइंटिस्ट एंड इंजीनियरिंग विंग द्वारा आयोजित 'नेशनल कॉन्फ्रेन्स कम मेडिटेशन रिट्रीट' का उद्घाटन संस्थान की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी ने किया। इसमें भारत सहित नेपाल से आठ हज़ार से अधिक साइंटिस्ट, इंजीनियर्स व टेक्नीशियन पहुंचे।

संस्थान की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी ने कहा कि राजयोग के अभ्यास से जीवन सुखमय बनेगा। इसके गवाह लाखों भाई-बहनें हैं।

गुरूग्राम से आये हीरो साइकिल प्राइवेट लिमिटेड के ऑपरेशन वाइस प्रेसीडेंट आर.के. रतन ने अपना अनुभव बताते हुए कहा कि राजयोग मेडिटेशन से मेरे अंदर पहले की अपेक्षा सकारात्मकता बढ़ी है।

गुजरात भाजपा प्रदेश उपाध्यक्षा रमीला बारा ने कहा कि वर्तमान समय को देखते हुए आज सभी को मेडिटेशन की बहुत ज़रूरत है। मेडिटेशन से हमारा मन शांत होता है।

राउरकेला एन.एस.पी.सी.एल. के ए.जी.एम. ब्र.कु. अरुणा साहू ने कहा कि मैं अपने अनुभव से कह सकता हूँ कि राजयोग मेडिटेशन हमारे जीने के नज़रिए को बदल देता है। संस्थान के महासचिव ब्र.कु. निर्वैर ने कहा कि एक परमात्मा के अतिरिक्त दूसरा कोई मन की सच्ची शांति प्रदान नहीं कर सकता है।

दादी जानकी के साथ दीप प्रज्वलित कर सम्मेलन का उद्घाटन करते अतिथिगण एवं वरिष्ठ ब्रह्माकुमार भाई।

साइंटिस्ट एंड इंजीनियर्स विंग के उपाध्यक्ष ब्र.कु. मोहन सिंघल ने कहा कि यहां के आध्यात्मिक वातावरण का आप सभी पूरी तरह से लाभ लें। साथ ही कॉन्फ्रेन्स के दौरान जो खुश रहने के सीक्रेट वक्ताओं द्वारा दिये जा रहे हैं, उनको अपने जीवन में धारण करें।

मुम्बई से आये मोटिवेशनल स्पीकर एवं ट्रेनर प्रो. ब्र.कु. स्वामीनाथन ने कहा कि खुशी हमारी निजी पूंजी है। अगर ठान लो तो कोई दूसरा आपको दुःखी नहीं कर सकता है।

नेपाल से आये वॉटर सप्लाई प्रोजेक्ट के एक्ज़ीक्युटिव डायरेक्टर सूर्यराज कदेल ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्थान लोगों को बदलने का महान कार्य कर रहा है। यहां के वातावरण में अद्भुत शक्ति का अनुभव होता है।

बैंगलुरु के कलाकारों ने दी आकर्षक प्रस्तुतिः बैंगलुरु से आए विदूषी पनिमाला एवं विदवन राजूभाई ग्रुप के कलाकारों ने आकर्षक नृत्य की प्रस्तुति के माध्यम से सभी अतिथियों का स्वागत किया। मधुर वाणी ग्रुप के कलाकारों ने सुंदर गीत की प्रस्तुति दी। संचालन गांधीनगर गुजरात की ब्र.कु. मेघा ने किया।

इस दौरान विंग के नेशनल कोऑर्डिनेटर जवाहर मेहता, एक्ज़ीक्युटिव मेम्बर नरेन्द्र पटेल ने भी अपने विचार व्यक्त किये। वहीं डायमण्ड हॉल में एक ज्ञानवर्धक एवं आकर्षक 'हैल्लो हैप्पीनेस' फेयर का भी आयोजन किया गया। जहां कॉन्फ्रेन्स के प्रतिभागियों ने पहुंचकर जीवन में खुशी लाने के सीक्रेट को समझा। इसमें बहुत ही खूबसूरती से साइंस के चमत्कारों को स्पीरिचुअलिटी के माध्यम से दिखाया गया था।

प्रत्येक व्यक्ति प्रेरित होगा, तभी विकास संभव होगा

यू.एस.ए.। युनाइटेड नेशन्स में आयोजित 67वें दो दिवसीय डी.पी.आई. एन.जी.ओ. कॉन्फ्रेन्स के दौरान आयोजित पैनल डिस्कशन में ब्रह्माकुमारीज़ की यू.एन. रीप्रेज़ेन्टेटिव ब्र.कु. गायत्री नारायणे ने 'हाउ टू चेंज द वर्ल्ड' यूज़िंग कन्टेम्प्लेटिव डिसीप्लिन्स इन द सर्विस ऑफ पीस, जस्टिस एंड ह्युमन राइट्स' विषय पर सम्बोधित किया। इस पैनल में डेबोरा नॉरिस,पी.एच.डी.,फाउण्डर ऑफ द माइंडफुलनेस सेंटर तथा रोबर्ट पेरी,एस्क्वायर,श्री राम चन्द्र मिशन भी शामिल रहे। इस पैनल को सुगम बनाने में डेनिस स्कॉटो, एस्क्वायर,चेयर,इंटरनेशनल डे ऑफ योगा कमेटी टू द यू.एन. तथा रैपर्टर पेट्रा स्वेज़र,पी.एच.डी.,प्रोफेसर ऑफ कम्पैरेटिव लिटरेचर ने अपना सहयोग दिया।

इस दौरान आयोजित इंटरनेशनल डायलॉग में शामिल हुए ब्रह्माकुमारीज़ की यू.एन. रीप्रेज़ेन्टेटिव सविता गीर, फ्रान्सेस ज़ैनोएद्दीन,इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ एजिंग तथा जदाया स्पेन्सर,इंटरनेशनल यूथ लीडरशिप इंस्टीट्यूट। इस छोटे से ग्रुप ने पीढ़ियों के बीच की दूरी को भरने के बारे में विचार विमर्श किया। इससे यह निष्कर्ष सामने आया कि ये अति आवश्यक है कि युवाओं को आज जिन मुद्दों का सामना करना पड़ रहा है, उसपर हम ध्यान दें, हालांकि हम व्यस्कों के मुद्दों को भी नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते। अधिकतर मामलों में युवा एवं व्यस्क एक समान परिस्थितियों का सामना कर रहे हैं जैसे कि आर्थिक , स्वास्थ्य सम्बंधी, शिक्षा, भोजन, नौकरी इत्यादि। इन समस्याओं से निपटने के लिए प्रत्येक व्यक्ति के सहयोग की आवश्यकता है। सभी को इस अभियान का समर्थन करना चाहिए। यदि हम बदलाव चाहते हैं तो हमें अपनी सोच को बड़ा करना होगा जन्म से मृत्यु तक।

- **पचास देशों से दो हज़ार लोग हुए शरीक**
- **एक खास स्थान रखा गया था : यूथ हब**
- **खूबसूरत नाटक के साथ हुआ समापन**

ब्रह्माकुमारीज़ के युवा भाई बहनों ने एक प्रदर्शनी द्वारा यू.एन. के विकास के मुद्दों पर प्रत्येक व्यक्ति के सहयोग की आवश्यकता के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि यदि प्रत्येक व्यक्ति कुछ करने को प्रेरित नहीं होगा, तो विकास संभव नहीं है। यदि मानव अपने आत्मा की ज्योति जगाये एवं पूरी शक्ति के साथ सभी के सहयोग से कार्य करे तो सब संभव है एवं किसी भी लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ की ब्र.कु. जुलिया ग्रिंडन-वेल्च, ब्र.कु. किन्नारी मुर्ति तथा ब्र.कु. प्रमिती शाह के साथ अन्य ब्र.कु. भाई बहनें उपस्थित रहे।

पचास देशों से लगभग दो हज़ार लोग इस कार्यक्रम में शरीक हुए। इस दो दिवसीय सम्मेलन में युवाओं के लिए एक खास स्थान रखा गया था - यूथ हब।

कार्यक्रम का समापन एक बहुत ही खूबसूरत नाटक के साथ हुआ, जिसमें कन्याओं की समस्याओं के बारे में बताया गया और कहा गया कि बालिकाओं एवं महिलाओं की आवाज़ को सुना जाना चाहिए।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SRO/9623/18-20, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2018-20, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 3rd Oct 2018
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं अमर उजाला प्रेस द्वारा मुद्रित।